फलों की खेती

फलों की खेती

★

लेखक

पी. पी. मलहोत्रा एम. एस. सी.

★

प्रमुख वितरक

तुलसी साहित्य सदन

म. गां. मार्ग (खजूरी बाजार), इन्दौर २

★

प्रकाशक

कृषी साहित्य प्रकाशन

१०६, लूकरगंज, इलाहाबाद १

सन् १९६५] ✵ [मूल्य १-५० पैसे

भूमिका

भारत एक कृषि प्रधान देश है। लेकिन आदिकाल से ही अनाजों की कृषि के साथ फलों की कृषि का भी महत्व रहा है। गाँवों में आज भी फलदार वृक्ष लगाना बड़े पुण्य का काम समझा जाता है। जिन लोगों के संतानें नहीं होतीं वे उनके अभाव की पूर्ति के लिए फलदार वृक्षों के बाग़ लगाते हैं और विचार करके देखा जाये तो फलों का बाग़ सन्तान की तरह ही जवान होने के बाद अपने मीठे फलों से केवल उन्हें आरोपित करने वालों की ही सेवा नहीं करता बल्कि अगली पीढ़ियों तक बाग लगानेवाले के यश को ले जाता है और लोगों को सेवा अपने फलों से करता है। यही कारण है कि भारत के किसी भी गाँव में जायें तो हमें चारों ओर आम, महुआ, कटहल, जामुन आदि कितनी ही तरह के फलदार वृक्षों के बड़े बड़े बाग़ मीलों के घेरे में फैले हुए मिल जायेंगे। और ये बाग़ भारत की गरीब ग्रामीण जनता की जीविका के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। गाँवों के कितने ही लोग कुछ महीने एक वक्त आम, महुआ, जामुन कटहल आदि खाकर रह जाते हैं। उन पर्वतीय प्रदेशों में जहां कृषि योग्य भूमि को कमी है जैसे कश्मीर में, फलों के बाग़ जीविका के मुख्य साधन हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि हमारे पूर्वजों को अत्यन्त प्राचीन काल से फलोंत्पादन का महत्व ज्ञात था और इसीलिए फलों के वृक्षों के आरोपण को उन्होंने एक धार्मिक महत्व दे दिया था लेकिन धीरे-धीरे लोगों में इस ओर से उपेक्षा का भाव जगने लगा और नये बाग़ों का लगाना बन्द कर दिया गया। इसका एक कारण आधुनिकता की लहर के कारण धार्मिकता का अभाव है और दूसरे लोगों को अनाज की खेती करने में अधिक तात्कालिक लाभ दिखाई दिया क्योंकि फलों का बाग़ किसी उपजाऊ भूमि में लगा देने पर कई साल तक फलों के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ती है। फिर देहातों में

निजी बाग़ के फलों के विक्रय को हेय दृष्टि से देखने की प्रवृत्ति के कारण भी अतिरिक्त नये वृक्षों के उपारोपण का प्रयास आर्थिक दृष्टि से अनुपयोगी समझ लिया गया। परिणाम यह हुआ कि अब भारतीय गाँवों में फलों के नये बाग़ों का नितान्त अभाव हो गया है और अगर सर्वेक्षण कराया जाय तो फलों के वृक्षों में पचीस वर्ष से कम आयु के दस-पन्द्रह प्रतिशत से भी कम निकलेंगे। फिर फलों के जो पुराने बाग़ मौजूद भी हैं उनकी स्थिति बड़ी असुविधाजनक है। ग्रामीण जनता में दूर-दूर बिखरे खेतों के छोटे-छोटे टुकड़ों की तरह बाग़ के वृक्षों का भी बँटवारा हो गया है और किसी के चार पेड़ यहाँ हैं तो दस पेड़ वहाँ से मील भर दूर। इसलिए फलों के मौसम में न तो ठीक से रखवाली हो पाती है और न फल ढोकर घर ले आने या बाज़ार ले जाने में सुविधा है। फिर अपने वृक्षों के फल न बेचने की प्रवृत्ति के कारण आवश्यकता से अधिक फलों का कोई आर्थिक उपयोग नहीं रह जाता। ताज़े फलों के संरक्षण का कोई उचित उपाय न होने के कारण वे या तो दूसरों को बांट दिये जाते हैं या पड़े पड़े सड़ जाते हैं। इसीलिए अगर कोई फलों के नये वृक्ष लगाता भी है तो वह अपनी सुविधाजनक तथा उपजाऊ भूमि न फँसाकर दूर की किसी ऊबड़-खाबड़ भूमि इसके लिए चुनता है। फिर बाग़ों में जो वृक्ष हैं भी उनकी उचित देखभाल नहीं की जा रही है जिससे कि उनमें से अधिकांश सूखते जा रहे हैं। यह सब इसीलिए हो रहा है कि हमारे यहाँ की जनता फलों के महत्व तथा उपयोगिता के बारे में अच्छी तरह अवगत नहीं है। जिस तरह कृषि की उन्नति के बारे में किए गये आन्दोलनों से इधर किसानों में जागृति की एक नयी लहर आयी है वैसी ही जागृति ग्रामीण जनता में फलोत्पादन के प्रति ले आने की आवश्यकता है। वास्तव में फलोत्पादन को भी अन्नोत्पादन की तरह कृषि के स्तर पर ले आने की आवश्यकता है। शहर के लोग प्रायः बाग़ शोभा और शौक़ के लिए लगवाते थे और गाँवों के लोग पुण्य कार्य समझ कर। और इससे जो फल मिल जाते थे उन्हें वे एक अतिरिक्त लाभ समझते थे। हमें इस दृष्टिकोण में आमूल परिवर्तन

करना पड़ेगा। और फलोत्पादन को आर्थिक उपयोगिता की दृष्टि से देखना पड़ेगा।

जहां तक आर्थिक लाभ के लिए फलोत्पादन का प्रश्न है गांवों की किसान जनता को ही इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि इस कार्य के लिए उन्हीं लोगों के पास पर्याप्त भूमि उपलब्ध है। यहां एक बहुप्रचलित भ्रम का निवारण कर देना आवश्यक है। कुछ लोगों का विचार है कि किसी उपजाऊ भूमि में फलों के वृक्ष लगाने की अपेक्षा अन्नोत्पादन करना आर्थिक दृष्टि से अधिक लाभजनक है। मेरा विचार है इस बात में आंशिक सत्य ही है। अगर किसी किसान के पास बहुत थोड़े से खेत हैं और वह उन्हीं में खूब मेहनत करके साल में कई फसलें उगा लेता है तो उसके लिए फलों का बगीचा लगाना अधिक लाभजनक नहीं। लेकिन जिन किसानों के पास पर्याप्त कृषि-योग्य भूमि है उन्हें उसका एक अंश अवश्य ही फलोत्पादन के लिए उपयोग में लाना चाहिए। साल दो साल अवश्य अधिक देखभाल और मेहनत करनी पड़ती है लेकिन एक बार लग जाने के बाद वृक्षों से निरन्तर फल मिलते रहते हैं और मेहनत भी अधिक नहीं करनी पड़ती।

फलोत्पादन के लिए उपयुक्त भूमि के चुनाव का बड़ा महत्व है। सुरक्षा, सिंचाई की सुविधा तथा देखभाल में आसानी की दृष्टि से अपनी भूमि का कोई उपजाऊ भाग फलों का बाग़ लगाने के लिए चुनना चाहिए। कुछ लोग बाग़ लगाने के लिए एक दूसरे से दूर स्थित फालतू भूमि के छोटे-छोटे टुकड़े चुनते हैं। ऐसा करने से उनकी सुरक्षा तथा देखभाल का काम काफ़ी मुश्किल हो जाता है। बाग़ के लिए भूमि का कोई एक बड़ा टुकड़ा चुनना चाहिए और फिर उसमें मन चाहे फलों के वृक्ष करीने से लगाने चाहिए। फलों के वृक्षों का आरोपण करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वहां की धरती तथा जलवायु में किन फलों के वृक्ष अच्छी तरह उपज सकते हैं। फिर उनकी आर्थिक उपयोगिता के बारे में भी विचार कर लेना चाहिए। जब तक विशिष्ट सुरक्षा की व्यवस्था न हो

तब तक उस क्षेत्र में अप्राप्य क़िस्म के किसी फल के वृक्ष नहीं लगाने चाहिए अन्यथा चोरो से फलों के तोड़ लिए जाने के सम्भावना बनी रहेगी।

जिस तरह सरकारी फार्मों और पशुशालाओं में अनाजों और पशुओं की क़िस्में और नस्लें सुधारने के लिए अनुसन्धान किए जाते हैं उसी तरह सरकारी पौधशालाओं में उन्नत क़िस्म के फलों के उत्पादन की व्यवस्था है। फलवाले वृक्षों के बाग़ लगाते समय इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि उनमें उन्नत क़िस्म के फलों के वृक्ष रहें। इसके लिए हमेशा सरकारी पौधशालाओं से वृक्षों की कलमें और पौधें लाकर लगानी चाहिये। अगर किसी के अपने ही बाग़ में उन्नत क़िस्म के फलों के कुछ वृक्ष हों तो उन्हें खुद क़लमें और पौधें तैयार करके लगानी चाहिए क्योंकि सरकारी पौधशालाओं से ले आने में खर्च अधिक पड़ता है। जिन वृक्षों की क़लमें लग सकती हैं उनकी पौधें नहीं लगानी चाहिए क्योंकि कलमी पेड़ जल्दी ही फल देने लगते हैं और उनके फल बड़े तथा उत्तम कोटि के भी होते हैं।

जिस तरह किसान अपने खेतों में बोये हुए अनाज के पौधों की देख-भाल करते हैं वैसे ही उन्हें अपने बाग़ के वृक्षों की भी करनी चाहिए क्योंकि उन्हें भी सिंचाई-गुड़ाई तथा खाद की ज़रूरत पड़ती है जिनके अभाव में फल देना बन्द कर देते हैं या कम देते हैं या सूखने लगते हैं, फिर वृक्षों को बीमारियों से भी बचाने की ज़रूरत पड़ती है। उचित उपचार करने से कितने ही सूखते हुए वृक्ष फल देने लगते हैं।

नया बाग़ लगाया जाता है तो कुछ वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है तब वृक्ष फल देना शुरू करते हैं। यही कारण है कि किसान इस काम में अपनी उपजाऊ भूमि फंसाने से घबराते हैं लेकिन अगर वे चाहें तो जब तक वृक्ष जवान नहीं हो जाते छोटे-छोटे नाले बनाकर शेष भूमि खेती के काम में ला सकते हैं। चतुर किसान वृक्षों के बड़े हो जाने पर भी खाली ज़मीन से बहुत कुछ उपजा लेते हैं। ऐसा करते वक़्त इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि वृक्षों की खूराक में कमी न होने पाये।

फलों की आर्थिक उपयोगिता की ओर अब धीरे-धीरे गांवों के लोग

भी जागरूक होते जा रहे हैं। ग़रीब ही नहीं कितने ही धनी ग्रामीण भी अपनी पुश्तैनी बाग़ों के फल बाज़ारों में बिकने के लिए भेजने लगे हैं। आधुनिक क़िस्म से फलों की खेती करने वालों को चाहिए कि वे अपने बाग़ के फलों को उचित मूल्य पर बेचें। इसके लिए उन्हें आवश्यकता पड़े तो पास के शहर तक फलों को पहुँचाने की व्यवस्था करनी चाहिए। इसके लिए सहकारी आधार पर कोई व्यवस्था की जाये तो अधिक सुविधाजनक होती है। आजकल एक जगह से दूसरी जगह फलों को ले जाने की ऐसी व्यवस्था है कि वे सड़ने नहीं पाते और दूरस्थ स्थानों में वे अच्छे दामों पर बिक जाते हैं। इसके अतिरिक्त देश में फलों को डिब्बे बन्दी के बड़े-बड़े कारख़ाने बन जाने के कारण अब वे बहुत दिनों तक सुरक्षित भी रखे जा सकते हैं। इन सब सुविधाओं के कारण भारत में फलोत्पादन का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल है। भारत के किसान अगर इस ओर ध्यान दें तो उनकी अपनी आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती है और ताज़े फलों के बंद डिब्बों का निर्यात करके हमारा राष्ट्र निर्माण कार्यों के लिए भारी परिमाण में विदेशी मुद्राएं प्राप्त कर सकता है।

★

विषय-सूची

आम

भारत जैसे कृषि-प्रधान देश में जहाँ हर श्रेणी के निर्धन व धनी व्यक्ति हैं, आम अपने अच्छे स्वाद तथा सुलभ होने के कारण सब का प्रिय फल है। यह अनेक रोगों में दवा के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। यह स्वादिष्ट होने के कारण विदेश भी भेजा जाता है। विदेशी लोग इसे बहुत पसन्द करते हैं। अपनी मज़-बूत लकड़ी के कारण यह भाँति-भाँति का सामान (Furniture) बनाने के काम भी आता है। इन सामानों में मुख्य कुर्सी, मेज़, अलमारी तथा पलंग हैं। यह आम की लकड़ी से बनते हैं। आम के पत्ते धार्मिक कामों में बहुत शुभ समझे जाते हैं, इसी कारण भारत में यह अपना एक विशेष स्थान रखते हैं। आम के पत्तों का उपयोग विवाह आदि शुभ कार्यों में किया जाता है। इसके पत्तों को सड़ा कर खाद भी बनाई जाती है।

आम से बनने वाले पदार्थ

आम के वृक्ष का प्रत्येक भाग बहुत उपयोगी है। इससे बनने वाली वस्तुओं को दो मुख्य भागों में बाँटा जा सकता है—

(१) फल से प्राप्त होने वाली वस्तुएँ।

(२) तने से प्राप्त होने वाली वस्तुएँ।

फल से प्राप्त होने वाली वस्तुएँ

आम से खाने की भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुएँ बनाई

जाती हैं। कच्चे आम से अचार, मुरब्बा, चटनी तथा खटाई बनाई जाती है। पक्का आम खाने के अतिरिक्त अमावट आदि बनाने के काम भी आता है। आम की गुठली भी बहुत उपयोगी है। इसका उपयोग नये-नये वृक्ष बोने में किया जाता है। हकीम इसकी गुठली को पीस कर इसका चूर्ण बनाते हैं। यह चूर्ण पेट की बीमारियों में लाभदायक होता है।

तने से बनने वाली वस्तुएँ

तने से लकड़ी प्राप्त होती है। आम की लकड़ी बहुत मज़-बूत और हल्की होती है। यह मेज़, कुर्सी, पलंग आदि सामान (Furniture) बनाने के काम आती है।

आम की पैदावार

भारतवर्ष के लगभग सभी प्रान्तों व सभी स्थानों पर आम पैदा किया जा सकता है। आम की अच्छी फसल के लिए ५५'' से ११०'' तक वर्षा तथा शुष्क मौसम का होना आवश्यक है। ऐसे स्थानों पर जहाँ इस प्रकार की जलवायु तथा मिट्टी पाई जाती है, आम की खेती के लिये उपयोगी हैं। निम्न स्थान आम की खेती के लिये विशेषकर उत्तम हैं :—

उत्तर प्रदेश, मद्रास, बिहार तथा पंजाब। उत्तर प्रदेश तथा मद्रास प्रान्त में आम बहुतायत से पैदा किये जाते हैं।

तैयारी तथा खाद

उपयुक्त ज़मीन चुनने के बाद उसकी खुदाई करनी चाहिये। घास आदि अनावश्यक वनस्पतियों को उखाड़ देना चाहिए। तब

इसमें खाद डालनी चाहिये। खाद को अच्छी तरह से मिट्टी में मिला लेना चाहिये और फिर खेत में डालना चाहिये। आम के लिए खाद, जिसमें अमोनियम सल्फेट तथा नाइट्रोजन अधिक मात्रा में तथा पोटाशियम कम मात्रा में हो, अधिक उपयोगी है। आम को क्यारियों में बोया जाता है। अतः खेत में क्यारियाँ बना लेनी चाहिये। ये क्यारियाँ वर्गाकार या आयताकार किसी भी प्रकार की हो सकती हैं। अब इन क्यारियों में गोबर की खाद डालनी चाहिये। क्यारियाँ साधारणतया ज़मीन से सात-आठ इंच अधिक ऊँचा होनी चाहिये। ये क्यारियाँ वर्षा ऋतु में तैयार की जाती हैं। इन क्यारियों में वृक्ष मध्य जून से सितम्बर तक बोये जाते हैं।

यदि आम को कलम के तरीके से लगाया जाये तो अच्छी किस्म के आम पैदा किये जा सकते हैं। कुछ दिनों के बाद पौधे निकल आते हैं। जब पौधा लगभग डेढ़ फीट का होता है तो इसे उखाड़ लिया जाता है। पौधों को अब कुछ दूरी पर खेत में बो दिया जाता है। कलम लगाने के लिये पौधे की उम्र लगभग एक वर्ष होनी चाहिये।

सिंचाई

अधिक सिंचाई की इसको आवश्यकता नहीं होती। पौधा लगाने के बाद कुछ दिन सिंचाई करना आवश्यक है। इसके बाद लगभग ८, १० दिन में एक बार पानी देना चाहिये।

पौधों को ऐसे स्थानों पर नहीं लगाना चाहिये जहाँ वर्षा का जल रुकता हो। जल रुकने से पौधे की जड़ों के सड़ने का डर रहता है। फलने के समय वृक्षों को सींचना चाहिये।

फलने का मौसम

आम का वृक्ष पाँच, छै वर्ष में फलने लगता है। यह सदा बहार वृक्ष है। इसमें पतझड़ नहीं होता। सदैव नई-नई टहनियाँ और पत्तियाँ निकलती हैं। फल टहनियों के अन्तिम सिरे पर लगते हैं। यह गुच्छों में लगते हैं। आम की फसल भारतीय महीने से चैत्र में शुरू होती है।

बीमारियाँ तथा कीड़े

आम की मंजरी को रस चूसने वाले कीड़े नुकासान पहुँचाते हैं। डी० डी० टी० पाउडर का छिड़काव करने से मंजरी को कीड़ों से बचाया जा सकता है।

लीची

लीची का जन्मस्थान चीन ही माना जाता है। लीची बहुत अधिक मात्रा में चीन में पाई जाती है। भारत में लीची चीन की अपेक्षा बहुत कम मात्रा में पाई जाती है।

प्रकार

लीची कई प्रकार की होती है। पर इसकी एक किस्म दूसरी किस्म से अधिक भिन्न नहीं होती। मुख्यतः लीची तीन प्रकार की होती है :—

(१) छोटी गुठली वाली लीची।

(२) बड़ी गुठली वाली लीची।

(३) छोटी लीची,

इन तीनों तरह की लीची के स्वाद में कोई अन्तर नहीं है। इनका अन्तर केवल बनावट पर निर्भर करता है। जैसा कि बहुत से फलों जैसे आम, सेब आदि में होता है।

लीची की किस्में देशी, पूर्वी, चायना, कसवा, विद्यात आदि नामों से प्रसिद्ध हैं। सबसे अधिक अच्छी किस्म की लीची पूर्वी और चायना होती है। यह अधिक स्वादिष्ट, पतले छिलके की तथा अधिक गूदे वाली होती है।

लीची की खेती

उपयुक्त जलवायु

लीची के लिए नम जलवायु उत्तम है। इसकी खेती कम ठंडे तथा कम गर्म स्थानों पर अच्छी होती है। अधिक ठंडक तथा अधिक गर्मी लीची के लिए हानिकारक होती है।

लीची का बगीचा ऐसे स्थानों पर नहीं लगाना चाहिए जहाँ हमेशा तेज़ हवा चलती हो। तेज हवा से कच्चे फल गिर जाते हैं, जो किसी काम नहीं आते।

वर्षा

उत्तम खेती के लिए वार्षिक वर्षा लगभग ५०" से ५५" तक होनी चाहिए।

मिट्टी

इसके लिए सबसे अच्छी मिट्टी दोमट है। लीची की खेती

अधिक चूने वाली मिट्टी में अच्छी होती है। जिन स्थानों पर चूने की मात्रा कम होती है, वहाँ खाद के रूप में चूना डाल कर मिट्टी को लीची की खेती के योग्य बनाया जाता है।

खाद

लीची के बगीचे में समय-समय पर भिन्न-भिन्न प्रकार की खादें दी जाती हैं। जिनमें उपयोगी तथा विशेष निम्न हैं :—

(१) लकड़ी की राख

वृक्ष लगाते समय लकड़ी की राख को खाद के रूप में सबसे अधिक मात्रा में दिया जाता है।

(२) गोबर की खाद।

(३) हड्डी की खाद।

(४) चूना।

गोबर की खाद, हड्डी का चूरा, चूना आदि सामान्य मात्रा में मिट्टी में मिलाकर बगीचे में डाला जाता है। इससे भूमि अधिक उपजाऊ हो जाती है।

पेड़ लगाने के बाद पहले वर्ष गोबर की खाद अधिक मात्रा में देनी चाहिए। जैसे-जैसे पेड़ बढ़ता है उसको खाद की अधिक आवश्यकता पड़ती है। यही कारणहै कि अधिक उम्र वाले वृक्षों को अधिक खाद दी जाती है।

पौधा खाद्य तत्वों को अपनी जड़ों द्वारा प्राप्त करता है। फिर इन खाद्य तत्वों, अपने हरे रंग (Chlorophyll) तथा कार्बन-डाइ आक्साइड (Co२) से प्रकाश की उपस्थिति में भोजन बनाता है। यही भोजन पौधे को शक्ति प्रदान करता है, जिससे पौधा फूल-

फल सकता है।

चूने की खाद से अच्छा फल प्राप्त होता है। जब कि गोबर की खाद अन्य तत्व देने के साथ-साथ पौधे को अधिक मजबूत बनाती है।

सिंचाई

लीची के पेड़ों को अधिक सींचने की आवश्यकता नहीं होती। परन्तु कुछ सिंचाई करना आवश्यक होता है। पानी की अनुपस्थिति में पौधे अच्छी तरह बढ़ नहीं पाते। यही नहीं प्रतिकूल परिस्थितियों में यह सूख भी जाते हैं। अतः पौधा लगाने के बाद कुछ महीनों तक वृक्ष को १०-१२ बार महीने में सींचना चाहिए ताकि जड़ें अच्छी तरह भूमि में जम जाएँ। जब पौधा बड़े वृक्ष का रूप धारण कर ले, तो उसे अधिक सींचने की आवश्यकता नहीं रहती। शुष्क मौसम में सिंचाई करना अच्छा होता है।

पौधा लगाने की विधि

सर्वप्रथम उपयुक्त भूमि में वर्गाकार गड्ढे बनाने चाहिए। ये गड्ढे गर्मी तक अवश्य तैयार हो जाने चाहिए। इनको कुछ दिनों तक सूखने देना चाहिए, जिससे हानिकारक कीटाणु आदि नष्ट हो जाएँ। ये गड्ढे तीन फीट से साढ़े चार फीट तक की गहराई तथा व्यास के होने चाहिए। जून महीने के अन्तिम दिनों में इन गड्ढों को चूने की खाद, गोबर की खाद, हड्डी की खाद को मिट्टी में मिला कर भर देना चाहिए।

वर्षा ऋतु के बाद पौधों को इन गड्ढों में लगाना चाहिए। लीची का पेड़ धीरे-धीरे बढ़ता है। लीची के पेड़ बहुत

बड़े आकार के नहीं होते। यह छोटे तथा घने होते हैं। दो गड्ढों के बीच लगभग चार फीट की जगह छोड़नी चाहिए ताकि एक पेड़ दूसरे पेड़ को छू न सके।

सितम्बर, अक्टूबर के महीने में बगीचे को गोंड़ना चाहिए।

फल

दो-तीन वर्षों में वृक्ष फल देने लगते हैं। यह वर्ष में दो बार फल देता है। जनवरी में लगे फूल मार्च तक तथा सितम्बर में लगे फूल नवम्बर तक फल का रूप धारण करते हैं। लीची के फल गुच्छों के रूप में लगते हैं। यह छोटे आकार का फल होता है। इसका छिलका पतला परन्तु दानेदार होता है। छिलका उतारने पर सफेद रंग का गूदा और फिर गुठली प्राप्त होती है।

उपयोग

लीची केवल फल के रूप में प्रयोग की जाती है। इसका गूदा अत्यन्त स्वादिष्ट होता है।

बीमारी तथा कीड़ों से रक्षा

लीची के पेड़ कद में छोटे होते हैं। छोटे होने के कारण पशु इन्हें आसानी से नुकसान पहुँचा सकते हैं, इसलिए लीची के बगीचे के चारों ओर दीवार बनवा देनी चाहिए ताकि पशु बगीचे के अन्दर न आ सकें।

पशुओं के अतिरिक्त बहुत से छोटे-छोटे कीड़े भी लीची के वृक्षों को नुकसान पहुँचाते हैं। ये कीड़े पत्तों तथा फलों पर अपने अण्डे देते हैं। इन अण्डों से छोटे-छोटे कीड़े निकलते हैं, जो

पेड़ की पत्तियों तथा फलों से अपना भोजन प्राप्त करते हैं।

"गलिसरौल" आदि का छिड़काव करने से ये कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए लीची की सफल खेती की जा सकती है।

अमरूद

अमरूद बहुत ही साधारण कोटि का फल है। यह सस्ता तथा अधिक मात्रा में मिलने वाला फल है। यह स्वास्थ्यवर्धक तथा ठंडा फल है। अधिक मात्रा में अमरूद जाड़े के मौसम में प्राप्त होता है।

प्रकार

इसकी कई किस्में हैं—जिनमें कुछ तो बहुत अधिक स्वादिष्ट होते हैं, पर कुछ अच्छे नहीं होते। अमरूद की प्रसिद्ध किस्में निम्न हैं :—

बनारसी अमरूद

यह अमरूद मीठा, शक्ल में गोल तथा मोटा होता है। स्पर्श करने से यह मुलायम लगता है।

इलाहाबादी अमरूद

यह नाशपाती के आकार का एवं खाने में स्वादिष्ट होता है। इलाहाबादी अमरूद का रंग सफेद होता है। यह इलाहाबाद

में अधिक मात्रा में पैदा होता है। यही कारण है कि यह इलाहाबादी अमरूद कहलाता है।

लाल गूदा

यह अमरूद छोटा तथा गोल होता है। यह अन्दर से लाल रंग का होता है। इस अमरूद से एक विशेष प्रकार की मनमोहक सुगन्ध आती है तथा साथ ही यह स्वादिष्ट भी होता है।

बेदाना तथा सफेद

ये दोनों प्रकार के अमरूद बहुत स्वादिष्ट होते हैं। ये एक दूसरे से बहुत मिलते हुए होते हैं।

हरीझा आदि अन्य प्रकार के अमरूद स्वादिष्ट नहीं होते।

नये वृक्ष लगाने के तरीके

अब तो नये-नये तरीकों से भिन्न-भिन्न प्रकार के अमरूद के वृक्ष लगाये जाते हैं। जिनमें कलम करना, चश्मा, अराटा, साटा तथा बीजू मुख्य हैं। अधिकतर अमरूद के पौधे बीज से ही लगाये जाते हैं।

जलवायु

यह साधारण जलवायु में पाया जाता है। यह उन स्थानों में बहुतायत से पाया जाता है, जहाँ ग्रीष्म ऋतु में अधिक गर्मी तथा जाड़े में काफी जाड़ा पड़ता हो। अमरूद उष्ण जलवायु को सहन कर सकता है।

मिट्टी

इसके लिए सबसे उपयुक्त दोमट मिट्टी है। क्षार तत्वों का

मिट्टी में होना अधिक उपयोगी है।

खाद तथा खेत की तैयारी

पौधा लगाने से पहले लगभग साढ़े तीन फीट का गड्ढा खोदना चाहिए। कुछ दिनों तक इसे खुला रहने देना चाहिए, इससे धूप के कारण हानिकारक कीड़े मर जाते हैं। लगभग १५ दिन के बाद इन गड्ढों को गोबर की खाद से भर देना चाहिए। गोबर की खाद के अतिरिक्त बगीचे में लकड़ी की राख, हड्डी का चूरा आदि खाद के रूप में डालना चाहिए। इनकी मात्रा गोबर की खाद की अपेक्षा काफी कम होनी चाहिए।

पौधे को हर साल कुछ मात्रा बढ़ाकर खाद डालनी चाहिए। खाद से पौधे अधिक पौष्टिक होते हैं तथा स्वादिष्ट फल देते है। जैसे-जैसे पेड़ बड़ा होता है उसे अधिक खाद की आवश्यकता पड़ती है। यहाँ तक कि वृद्ध वृक्षों में तो दो मन तक गोबर की खाद डाली जाती है।

सिंचाई तथा छटाई

अमरूद के पेड़ के लिए सिंचाई बहुत आवश्यक है। जाड़े के महीने में दो-तीन बार तथा गर्मी में चार-पांच बार सिंचाई करनी चाहिए। पानी हमेशा चार-पांच दिन का अन्तर डाल कर पौधे को देना चाहिए।

सिंचाई करने से घुलनशील पदार्थ पानी में घुल जाते हैं। यह घुले हुए पदार्थ अब जड़ों द्वारा पौधे के अन्दर जाते हैं, जहाँ यह पौधे को शक्ति प्रदान करते हैं। इसीलिए यदि सिंचाई न की जाए तो पौधे सूख जायेंगे।

बड़े वृक्षों में छँटाई की कोई आवश्यकता नहीं होती। छोटे वृक्षों की छँटाई करने से उन्हें सुन्दर बनाया जा सकता है।

फल

अमरूद में फल वर्ष में लगभग तीन बार आते हैं। जाड़े के दिनों में फल अधिक मात्रा में मिलता है। कुछ फल जून के महीने में भी प्राप्त होते हैं, पर यह स्वादिष्ट नहीं होते। अमरूद का फल अक्टूबर, नवम्बर में प्राप्त होता है।

बीमारियाँ तथा कीड़े

अमरूद को बीमारियाँ अधिकतर फफूँदी द्वारा होती हैं। इससे फल गलने लगते हैं। इनसे पौधों की रक्षा करने के लिए "बोर्डो-मिक्सचर" का प्रयोग करना चाहिए।

हानिकारक कीड़ों में मुख्य तने को छेद करने वाले कीड़े (Stem borer) तथा दहिया कीड़े (Mealy bugs) हैं।

इन्हें चिड़िया, गिलहरी तथा फलमक्खी भी नुकसान पहुँचाती हैं

तने में छेद करने वाले कीड़े तनों में छेद कर देते हैं। इससे तने क वृद्धि रुक जाती है। इस भाँति वृक्ष नष्ट हो जाते हैं।

दहिया कीड़े (Mealy bugs) फूलों से रस चूसते हैं तथा टहनियों एवं पत्तियों का प्रयोग भोजन के रूप में करते हैं। इस भाँति ये पेड़ के सब भागों को हानि पहुँचाते हैं।

चिड़ियाँ, गिलहरी आदि फलों को काट देती हैं। इसके फल पकने पर शीघ्र ही गल जाते हैं।

तने में हुए छेदों में तारपीन का तेल डाल कर छेदक कीड़ों

(Stems borer) को नष्ट किया जा सकता है। डी० डी० टी० पाउडर के छिड़काव से दहिया कीड़े मारे जाते हैं।

उपयोग

अमरूद के कच्चे फल किसी भी काम नहीं आते। पक्के फल खाये जाते हैं। खाने के अतिरिक्त इसकी जैली भी बनती है। यह जैली बन्द डिब्बों में विदेश भेजी जाती है।

★

मौसम्मी

यह अधिक रस वाला तथा स्वादिष्ट फल है। इसका छिलका पतला तथा पीले रंग का होता है। यह आकार में माल्टा से बहुत मिलता है। यद्यपि इसका स्वाद माल्टा से भिन्न होता है।

खट्टी नारंगी

यह छोटे आकार की होती है। देखने में यह बहत सुन्दर लगती है, और यही कारण है कि लड़कियाँ इसे बालों तथा कोट आदि में सौन्दर्य को बढ़ाने के लिए लगाती हैं। यह खट्टे स्वाद की होती है। इसका छिलका पतला होता है। छिलके का रंग हरा तथा पीला होता है।

नागपुरी सन्तरा

यह भी एक प्रकार की नारंगी है। इसका छिलका पीला तथा मोटा होता है। नागपुर के क्षेत्र में अधिक मात्रा में

पैदा होने के कारण यह नागपुरी सन्तरा के नाम से बहुत प्रसिद्ध है। इसका रस बहुत स्वादिष्ट होता है। यह नागपुर तथा उसके आस-पास के इलाकों में अधिक पाया जाता है।

उपरोक्त लिखे गये सब फल नीबू जाति में आते हैं। यही कारण है कि इन सब की खेती प्रायः एक ही प्रकार से की जाती है।

जलवायु

इनकी खेती के लिए सब प्रकार की जलवायु उपयुक्त है। इनके पौधे अधिक गर्मी सहन कर सकते हैं।

मिट्टी

इन पौधों के लिए कंकड़ीली मिट्टी उपयुक्त है। यदि मिट्टी में चूने की मात्रा अधिक हो, तो खेती अधिक अच्छी हो सकती है। लवण वाली मिट्टी में इसके फल बहुत उत्तम प्रकार के मिलते हैं। इसकी खेती के लिए ऐसी जमीन होनी चाहिए जहाँ पानी अधिक समय तक न ठहर सके। पानी के रुकने से जड़ें सड़ सकती हैं, जिससे पौधों के नष्ट होने का भय बना रहता है।

प्रसार

मौसम्मी, माल्टा, नागपुरी सन्तरा तथा कागज़ी नीबू आदि पौधों के प्रसार के लिए भिन्न-भिन्न विधियाँ उपयोग में लाई जाती हैं, जिनमें अरुटा, चश्मा तथा दाव कलम मुख्य हैं। बीजू पौधों से मुख्यतः चश्मा तैयार किया जाता है।

बोने की विधि

खेत की तैयारी तथा उपयुक्त खाद

सर्वप्रथम खेत से घास आदि उखाड़ कर खेत को अच्छी तरह जोतना चाहिए। जोतने के बाद खेत को बराबर कर लेना चाहिए। भूमि में फिर दो फीट से तीन फीट तक गहराई तथा व्यास के गडढे खोदने चाहिए। इन गड्ढों को कुछ दिनों तक सूखने देना चाहिए ताकि हानिकारक कीटाणु आदि मर जाँए। अब इन गड्ढों को खाद से भर देना चाहिए। इसके लिए मुख्य खादें हड्डी का चूरा, लकड़ी की राख तथा गोबर की खाद है।

पौधों को अधिकतर चश्मा के तरीके से लगाया जाता है। पहले बीजों को छोटी-छोटी क्यारियों में बोया जाता है। यदि सूखे हुये बीजों को बोया जाए, तो अच्छे प्रकार के फल नहीं मिलते। यही नहीं अधिकतर उनसे पौधा बहुत देर में निकलता है। यही कारण है कि नीबू जाति के पौधों के बीजों को बोने के समय तक फल के अन्दर ही रहने दिया जाता है। बोने के समय फल से निकाल कर बीजों को क्यारियों में बो दिया जाता है। उस समय क्यारियों में अमोनियम सल्फेट (Ammonium Sulphate) को खाद के रूप में डालना चाहिए। इससे पौधे जल्दी निकल आते हैं। बीजों को जनवरी के अन्त से मार्च के अन्त तक बोना चाहिए।

बीज बोने के बाद पर्याप्त नमी का होना आवश्यक है। बीज से पौधा धीरे-धीरे निकलता है। लगभग एक वर्ष में पौधा नौ, दस इंच का हो जाता है। अब इन पौधों को उखाड़ कर गड्ढों

में लगा देते हैं, यहाँ चश्मा तैयार किया जाता है। इन चश्मों से तैयार किये हुए पौधों में फल लगते है।

पौधा जैसे-जैसे बड़ा होता जाए उसमें खाद अधिक मात्रा में देते रहना चाहिये। मिट्टी में "पोटाश" तथा "नाइट्रोजन" के अधिक होने से पौधा पौष्टिक होता है।

सिंचाई

इसे अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। गर्मी में लगभग महीने में तीन-चार बार तथा जाड़े में एक-दो बार सींचना काफी होता है।

बरसात में एक बार जुताई करना अच्छा है।

फूल लगने पर सिंचाई करना हानिकारक है, जब कि फल लगने पर सिंचाई करना अच्छा होता है।

फल

यह वर्ष में दो-तीन बार फल देते हैं। यह फल अधिकतर जनवरी, जून तथा अक्टूबर के महीनों में लगते हैं। यही कारण है कि नींबू जाति के फल अधिक या कम मात्रा में वर्ष भर प्राप्त होते हैं।

कीड़े तथा बीमारियाँ

इन्हें कई प्रकार की बीमारियाँ लग जाती हैं, जिनसे जड़ें सड़ जाती हैं या तने को नुकसान पहुँचता है। यदि तने का कोई भाग छिल या कट जाये तो उससे गोंद आदि निकलने लगती है। इससे तना कमज़ोर पड़ जाता है। अन्त में पौधा नष्ट हो

जाता है। फफूँदी (Fungi) जनित बहुत से रोग जड़ों को नष्ट करते हैं।

एक विशेष प्रकार की तितली के पिल्लू भी इन्हें नुकसान पहुँचाते हैं। इन पिल्लुओं को उठा-उठा कर मार देना चाहिये। इसके अतिरिक्त दहिया कीड़े (Mealy bug) आदि भी नीबू के वृक्षों को नुकसान पहुँचाते हैं। इन सब से पौधों को बचाने के लिये "ग्लिसरोल" का प्रयोग करना चाहिये।

संक्षेप में नीबू जाति के फलों की उत्तम खेती के लिये साफ सुथरी, तथा कीड़ों से रहित ज़मीन और स्वस्थ बीजों का होना आवश्यक है। सफल खेती के लिये बीमारी से भी इनकी रक्षा करना बहुत जरूरी है।

उपयोग

नीबू जाति के फल, खाने के अतिरिक्त शरबत अचार आदि बनाने के काम आते हैं।

केला

इसका जन्मस्थान भारत, चीन तथा इसके निकटवर्ती भाग हैं। अब तो केला संसार के प्रत्येक भाग में पाया जाता है। केला भारत में बहुत अधिक मात्रा में उपजाया जाता है। यह भारत में मद्रास, बिहार, बम्बई, आसाम तथा बंगाल में अधिक मात्रा में उपजाया जाता है। साधारण मात्रा में इसकी खेती भारत के सभी भागों में होती है।

जलवायु

केले के लिए गर्म जलवायु अच्छी है। तेज़ धूप इसे नुक-सान पहुँचाती है। केले के लिए हल्की वर्षा अच्छी है।

मिट्टी

केले के लिए दोमट,-उर्वरा मिट्टी उत्तम है।

पौधा लगाने की विधि तथा खाद

बगीचे को साफ करने के बाद लगभग छै गज़ की दूरी पर अढ़ाई तीन फीट की गहराई तथा व्यास के गड्ढे खोद लेने चाहिए। इन गड्ढों को कुछ समय के लिए सूखने दें, ताकि हानिकारक कीटाणु आदि मर जाएँ। जब गड्ढे सूख जाएँ तो इनमें २५ सेर गोबर की खाद, दस सेर कम्पोस्ट को मिट्टी में मिला कर भर दें। पौधा वर्षा के बाद लगाना चाहिए। पौधों को जून, जुलाई, अगस्त में लगाना चाहिए।

पौधा लगाने के बाद भी प्रत्येक वर्ष कुछ मात्रा में खाद बढ़ा कर डालते रहें, इससे वृक्ष अधिक स्वस्थ होते हैं। केले के लिए पोटाशियम सल्फेट, गोबर की खाद, कम्पोस्ट आदि उत्तम खादें हैं।

सिंचाई

केले के पौधे को हल्की सिंचाई की आवश्यकता होती है। गर्मी में सप्ताह में एक बार तथा जाड़े में दो सप्ताह में एक बार

सिंचाई करना अच्छा होता है।

फल

वृक्ष लगाने के लगभग दो वर्ष बाद फल प्राप्त होने लग जाते हैं। केला गुच्छों के रूप में प्राप्त होता है। जब गुच्छे कुछ पीले रंग के हो जाते हैं, तो इन्हें काट कर पौधे से अलग कर दिया जाता है। अब इन गुच्छों को कुछ गर्मी पहुँचा कर पके रूप में अथवा यों ही कच्चे रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

उपयोग

केले के पेड़ का फल ही नहीं प्रत्येक भाग बहुत उपयोगी है। केले का तना चारे के काम आता है। केले के पत्ते पत्तलों के काम आते हैं। विवाह आदि शुभ अवसरों पर केले के वृक्ष द्वार तथा मंडप सजाने के काम आते हैं। केले के पत्तों से टोकरियाँ भी बनाई जाती हैं।

पक्का केला फल के रूप में उपयोग किया जाता है। और कच्चा केला तरकारी के रूप में प्रयोग किया जाता है। केले के फल से भिन्न-भिन्न प्रकार के शरबत भी बनाए जाते हैं। केले के पत्तों की राख कपड़े आदि धोने के भी काम आती है। केले के फलों को सुखा कर पीस कर, आटे के रूप में भी उपयोग किया जाता है। केला पेट की बीमारियों के लिए उत्तम है।

आड़ू

आड़ू की जन्मभूमि के लिए आज तक सन्देह है। कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि यह चीन में सर्वप्रथम उत्पन्न हुआ, परन्तु अन्य लोगों का कहना है कि यह अफगनिस्तान में सबसे पहले उत्पन्न हुआ। इस भाँति आड़ू की जन्मभूमि के लिए भिन्न-भिन्न मत हैं। भारत में आड़ू अधिक मात्रा में काशमीर में उत्पन्न किया जाता है। कम मात्रा में यह उत्तर प्रदेश, बिहार आदि प्रान्तों में पाया जाता है।

उपयुक्त परिस्थितियाँ

मिट्टी तथा जलवायु

आड़ू के लिए बालू मिली दोमट मिट्टी उत्तम है। आड़ू की खेती के लिए जलवायु साधारण होनी चाहिए।

पौधा लगाने की विधि तथा खाद

सर्वप्रथम बगीचे को साफ करने के बाद तीन-तीन फीट गहराई तथा व्यास के गड्ढे खोद लेने चाहिए। अब इन गड्ढों को कुछ दिनों तक सूखने दें। सूखे हुए गड्ढों को गोबर की खाद, कम्पोस्ट तथा लकड़ी की राख को मिट्टी में मिला कर भर देना चाहिए। खाद डालने के बाद यदि वर्षा न हो तो सिंचाई करनी बहुत आवश्यक है। सिंचाई करने से खाद्य पदार्थ भली-भाँति मिट्टी में मिल जाते हैं। इस भाँति-भूमि अधिक उपजाऊ हो जाती है।

अब पौधा लगा देना चाहिए। पौधा लगाने के हर वर्ष बाद कुछ-न-कुछ मात्रा में खाद बगीचे में डालते रहना चाहिए। खाद डालने से फल अच्छा उत्पन्न होता है। खाद को अक्टूबर के महीने में डालना चाहिए।

सिंचाई तथा छँटाई

आड़ू के पेड़ों को अधिक सींचने की आवश्यकता नहीं है। इसीलिए केवल गर्मी के मौसम में कभी-कभी आवश्यकतानुसार पानी देना चाहिए।

आड़ू के वृक्ष की छँटाई करना उत्तम होता है। छँटाई में पुरानी टहनियों को काट दिया जाता है, इनके स्थान पर नई-नई टहनियाँ निकलती हैं और इन टहनियों में पुनः फल लगते हैं। छँटाई से एक तो अधिक फल प्राप्त होते हैं और वृक्ष भी अधिक सुन्दर दीखते हैं।

फल

आड़ू बोने के बाद लगभग तीन वर्ष में फल देने लगता है। आड़ू ग्रीष्म ऋतु में प्राप्त होता है। यह फल हरा होता है। इसका ऊपरी भाग कुछ लाली लिए हुए होता है। आड़ू एक स्वादिष्ट फल है।

उपयोग

इसके फल खाने के काम आते हैं। आड़ू अधिक स्वादिष्ट होता है। आड़ू पेट की बीमारियों के लिए एक उपयोगी फल है।

सेब

सेब एक विश्व-व्यापी फल है। सेब अमरीका यूरोप तथा चीन में अधिक मात्रा में पाया जाता है। सेब की खेती पहाड़ी इलाके में जहाँ ठंडक अधिक होती है, अच्छी होती है। भारत में इसकी खेती काशमीर, हिमालय प्रदेश तथा बिहार आदि में अच्छी मात्रा में होती है।

उपयुक्त परिस्थितियाँ

जलवायु

सेब की खेती ठंडे स्थानों पर अधिक होती है। सफल खेती के लिए जाड़े में अधिक जाड़ा होना आवश्यक है।

मिट्टी

यद्यपि भूमि की दृष्टि से ढलान वाली भूमि सेब के लिए उत्तम है। ढलान वाली ज़मीन में पानी अधिक समय तक रुक नहीं सकता, जिससे जड़ों के सड़ने का भय बना रहता है।

सेब की खेती के लिए सर्वोत्तम पहाड़ी दोमट मिट्टी उत्तम है।

बगीचा लगाने की विधि तथा खाद

सेब का पौधा लगाने के लिए बगीचे में लगभग तीन-तीन फीट व्यास के गड्ढे खोद लेने चाहिए, इन गड्ढों को खाद से भर देना चाहिए। इसके लिए गोबर की खाद, कम्पोस्ट, तथा लकड़ी की राखें खाद के रूप में उत्तम हैं। यदि वर्षा न हो तो सिंचाई

करना आवश्यक है।

सिंचाई के बाद दिसम्बर माह में पौधे लगाने चाहिए। इन पौधों को समय-समय पर खाद देना आवश्यक है।

सिंचाई तथा छँटाई

गर्मी के दिनों में सिंचाई करना अत्यन्त आवश्यक है।

सेब के पेड़ों की टहनियों में हल्की-हल्की छँटाई करने से फल अधिक संख्या में प्राप्त होते हैं।

फल

लगाने के लगभग सात वर्षों में सेब का पेड़ फल देने लग जाता है। सेब लगभग चार महीने तक मिलते रहते हैं। अगस्त से नवम्बर माह तक तो सेब बहुतायत से पाये जाते हैं, यद्यपि यह फल वर्ष भर बाज़ार में दिखाई पड़ता है।

सेब कई प्रकार के होते हैं। कुछ तो इनमें खट्टे किस्म के होते हैं और कुछ मीठे होते हैं। कुछ सेब हरे रंग के कुछ लाली लिए हुए होते हैं। यह आकार में कुछ छोटे होते हैं, कुछ सेब बड़े आकार के पीले रंग के होते हैं, यह चित्तीदार होते हैं।

उपयोग

सेब एक बहुत ही उपयोगी फल है। सेब खाने में अधिक स्वादिष्ट होता है। सेब का जैम, चटनी, मुरब्बा बनता है। सेब को दवा के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। यह खून की कमी, कब्ज़ आदि बीमारियों के लिए लाभदायक है।

शरीफा

शरीफा का जन्मस्थान अमरीका माना जाता है। वहाँ से भिन्न-भिन्न जातियों द्वारा यह भिन्न-भिन्न देशों में लाया गया। इन देशों में भारत मुख्य है। उपयुक्त जलवायु होने के कारण शरीफा भारत में बहुतायत से पैदा किया जाता है।

भारत में यह अधिकतर कलकत्ता, छोटा नागपुर, उत्तर प्रदेश तथा हैदराबाद में उत्पन्न किया जाता है। कम मात्रा में इसकी खेती लगभग सभी स्थानों पर की जाती है।

शरीफा की उत्पत्ति के लिए महत्त्वपूर्ण परिस्थितियाँ

जलवायु

इसके लिए साधारण जलवायु तथा नम हवा उपयुक्त है। यही कारण है कि शरीफा बरसात में लगता है। नमी के बिना इसमें फल नहीं लगते।

मिट्टी

इसके लिए कंकड़ीली, रेतीली दोमट मिट्टी बहुत उपयुक्त है।

खाद तथा बगीचे की तैयारी

सर्वप्रथम बगीचे को साफ करना चाहिए। घास आदि अनावश्यक वनस्पतियों को निकाल देना चाहिए। अब लगभग अढ़ाई फीट के गड्ढे कतारों में खोदने चाहिए। कुछ दिन इन गड्ढों को सूखने देना चाहिए। इससे हानिकारक कीटाणु नष्ट

हो जाते हैं। सुखाने के बाद गड्ढों को तीन सेर चूना, इक्कीस सेर गोबर की सड़ी खाद से भर देनी चाहिए। गड्ढों को इस तरह बनाना चाहिए कि पानी का निकास अच्छी प्रकार से हो सके। पौधा लगाने के बाद प्रत्येक वर्ष खाद डालते रहना चाहिए। खाद की मात्रा में कुछ वृद्धि भी करते रहें, क्योंकि जैसे-जैसे पौधा बड़ा होता है उसे अधिक खाद की आवश्यकता पड़ती है।

सिंचाई

पौधा लगाने के बाद कुछ दिन तक बराबर सिंचाई करते रहें, जिससे जड़ें मिट्टी में जम जाएँ। इसके पश्चात् गर्मी में छै-सात दिन में एक बार तथा जाड़े में पन्द्रह दिन में एक बार सिंचाई करना उचित है।

छँटाई की शरीफा को कोई आवश्यकता नहीं होती।

पौधा लगाने की विधि तथा फल

साधारणतः इसके पौधे बीजू से ही तैयार किए जाते हैं। चश्मा आदि तारीकों से पौधा लगाने में अधिक सफलता नहीं मिली है। उपरोक्त बताई गई रीति से तैयार किए हुए बगीचे में बीजों को बो दिया जाता है। पौधा तीन-चार वर्ष में फल देने योग्य हो जाता है। इसमें फल बरसात के दिनों में लगते हैं।

कीड़े तथा पक्षी

शरीफे के फलों को कीड़ों से तो कम ही नुकसान होता है, पर पक्षी इसे अपनी चोंच से काट देते हैं। यह कटे हुए फल शीघ्र ही गल जाते हैं। फलों को हानि से बचाने के लिए फल

पकने के समय पत्तियों को वृक्षों से उड़ाते रहना चाहिए।

उपयोग

भारत में शरीफा व्यापारिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें चीनी (Sugar) अधिक मात्रा में पाई जाती है। यह फल खाने के अतिरिक्त "आइस क्रीम" आदि में भी प्रयोग किया जाता है।

नाशपाती

नाशपाती की खेती पहाड़ी इलाकों में अधिक अच्छी होती है। यह भारत में अधिक मात्रा में काशमीर, हिमालय प्रदेश के कुछ भाग तथा दक्षिण भारत में मद्रास में पाई जाती है। नाशपाती के वृक्ष सामान्य ऊँचाई के होते है।

उपयुक्त परिस्थितियाँ

जलवायु

नाशपाती के लिये ठंडी जलवायु उपयुक्त है। नाशपाती की खेती के लिये आवश्यक है, कि जाड़े के दिनों में अधिक जाड़ा पड़े।

मिट्टी

पहाड़ी दोमट मिट्टी नाशपाती की खेती के लिए उत्तम है। भूमि ढलान वाली होनी चाहिये।

पौधा लगाने की विधि तथा खाद

बारह-तेरह गज़ की दूरी छोड़-छोड़ कर लगभग तीन फीट व्यास के गड्ढे खोदने चाहिये। इन गड्ढों की गहराई भी तीन फीट ही होनी चाहिये। इन गड्ढों को खोदने के बाद कुछ समय तक सूखने देना चाहिये। अब इन सूखे गड्ढों को गोबर की की खाद, कम्पोस्ट तथा हड्डी के चूर की खाद को मिट्टी में मिला कर भर देना चाहिये। तब हल्की सिंचाई करनी चाहिये तथा पौधा लगा देना चाहिये। पौधा जाड़े में लगाना अच्छा होता है।

सिंचाई

पौधा लगाने के बाद लगभग चार वर्ष तक सिंचाई करना बहुत आवश्यक है। जब पेड़ बड़ा हो जाये, तो कभी-कभी सिंचाई करना अच्छा है।

छँटाई

छँटाई में पुरानी, सूखी हुई बेकार टहनियों को काट दिया जाता है। इनके स्थानों पर नई टहनियाँ उग आती हैं। तब पुनः वे फल देने योग्य हो जाती हैं। इस भाँति छँटाई करने से अधिक संख्या में फल प्राप्त किये जा सकते हैं।

फल

पौधा लगभग सात वर्ष के बाद अच्छा फल देने लगता है। इसके फल गर्मी के दिनों में प्राप्त होते हैं। फल पतले छिलके के और हरे रंग के होते हैं।

उपयोग

इसके फल अधिकतर खाने के काम आते हैं। नाशपाती दिल के रोगों, कब्ज़, पित्त तथा कफ़ में लाभदायक है।

अनार

भारत में अनार ईरान तथा उसके निकटवर्ती भागों से आया है। यहाँ यह अच्छे पैमाने में पाया जाता है। उत्तर प्रदेश, बिहार तथा दक्षिण भारत में यह बहुतायत से उत्पन्न किया जाता हैं।

उपयुक्त परिस्थितियाँ

जलवायु

अनार के लिए अधिक गर्म तथा अधिक ठंडी जलवायु उत्तम है। इसके लिए नमी वाली जलवायु हानिकारक है।

मिट्टी

इसके लिए दोमट मिट्टी उत्तम है। इसकी खेती सब प्रकार की भूमि में की जा सकती है।

खाद, बगीचे की तैयारी तथा पौधा लगाने की विधि

भूमि को सबसे पहले घास आदि निकाल कर साफ कर लेना चाहिए। अब इस भूमि में तीन गज़ की दूरी छोड़ कर गड्ढे बना लेने चाहिए। इन गड्ढों का व्यास तथा गहराई लगभग अढ़ाई-तीन फीट होनी चाहिये। अब इन गड्ढों को कुछ दिनों तक सूखने देना चाहिये।

इन गड्ढों को कम्पोस्ट तथा गोबर की सड़ी खाद से भरना चाहिए। डेढ़ मन गोबर की खाद तथा दस सेर कम्पोस्ट को मिट्टी में मिला कर गड्ढों को भरें।

वर्षा के बाद इन गड्ढों में पौधों को लगाना चाहिये। पौधा लगाने के बाद प्रत्येक वर्ष अमोनियम सल्फेट, चूना, गोबर की खाद आदि डालते रहें। खाद की मात्रा प्रत्येक वर्ष कुछ बढ़ा दें। अधिक बड़े वृक्षों को सवा मन गोबर की सड़ी खाद, डेढ़ सेर अमोनियम सल्फेट, लकड़ी की राख तथा चूना क्रमशः साढ़े पाँच सेर तथा सवा सेर डाले। खाद डालने से वृक्ष द्वारा स्वादिष्ट, स्वस्थ फल प्राप्त होते हैं, जो खेती का मुख्य उद्देश्य है।

सिंचाई तथा छँटाई

अनार के वृक्ष को अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। गर्मी के दिनों में सप्ताह में एक बार सिंचाई करना अच्छा होता है।

अनार के फल नई टहनियों में लगते हैं। अधिक फल प्राप्ति के लिए छँटाई आईवश्यक है। पुरानी टहनियों को लगभग एक-एक फीट लम्बाई तक काट देते हैं। अब पुरानी टहनियों में से नई टहनियाँ निकलने लगती हैं, इस भाँति अधिक फल प्राप्त हो सकते हैं।

फल

अच्छे प्रकार के वृक्ष बाईस, तेईस वर्ष तक फल देते रहते हैं। एक पेड़ से काफी फल प्राप्त हो जाते हैं। अनार के वृक्षों को वर्ष में दो-तीन बार फूल आते हैं, पर फल मौसम में ही

अच्छा उत्पन्न होता है। इसीलिए बेमौसमी फूलों को सिंचाई आदि से गिरा दिया जाता है। अनार का फल लगभग छै महीने में तैयार हो जाता है।

किस्में

अनार की कई भिन्न-भिन्न किस्में हैं, यह एक दूसरे से बहुत मिलती जुलती हैं। कुछ अनारों के दाने का रंग हल्का गुलाबी होता है। इस भाँति के अनार साधारणतः ऊपर से भी लाल रंग के नहीं होते। मगर कुछ किस्मों के अनार उजले चमकते हुए हल्के लाल रंग के होते हैं। इनका छिलका भी लाल होता है। यह अनार बेदाना के नाम से प्रसिद्ध हैं। कन्धारी अनार भी एक स्वादिष्ट तथा उत्तम किस्म का अनार है।

बीमारी तथा कीड़े

अनार को अधिक हानि कीड़ों से होती है विरकोला आइ-सोक्रेटस नाम का कीड़ा अनार को बहुत हानि पहुँचाता है। यह कीड़ा अपने अण्डे फूलों तथा फलों पर देता है। यह अण्डे तथा इनसे निकले हुए प्यूपा फूलों तथा फलों को नष्ट कर देते हैं।

इनसे बचाने के लिए फलों को थैली से ढक देना चाहिये जिससे यह तितली के आकार का कीड़ा फूलों तथा फलों पर न बैठ सके।

उपयोग

अनार कड़े छिलके वाला फल है। इसे आसानी से चाकू

द्वारा काटा जा सकता है। यह दानेदार फल है। इसमें अनेक बीज होते हैं, प्रत्येक बीज पर झिल्ली के समान एक परत होती है। इस झिल्ली के भीतर रस भरा रहता है। अनार का रस बहुत पौष्टिक पदार्थ है। इसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के एसिड पाये जाते हैं। इसमें मुख्यतः चीनी तथा साइट्रिक ऐसिड हैं।

नीबू

संसार में नीबू जाति के फल बहुत विकसित स्थिति में हैं। संसार में कई किस्मों के नीबू पाये जाते हैं। भारत की निम्न किस्में प्रसिद्ध हैं :—

(१) कागज़ी नीबू
(२) खट्टा नीबू
(३) माल्टा
(४) मौसम्मी
(५) नागपुरी सन्तरा
(६) मीठा नीबू
(७) मीठी नारंगी
(८) खट्टी नारंगी।

कागज़ी नीबू

कागज़ी नीबू के वृक्ष अधिक झाड़ीदार होते हैं। इसके पत्ते प्रायः बैजनी रंग के होते हैं। इसका पटियोल पंखदार होता है। इसके फूल आकार में अन्य नीबू से छोटे होते हैं। फलों का

छिलका पतला तथा गूदा हरा पन लिए हुए होता है।

खट्टा नीबू

खट्टा तथा कागज़ी नीबू यथा सदा फल के बीच स्थान रखता हैं। इसके फूल आकार में बड़े होते हैं तथा फल रसदार होते हैं। फल का छिलका अधिक पतला होता है। खट्टे नीबू का गूदा पीले रंग का होता है।

मीठा नीबू

जैसा कि नाम से विदित होता है, मीठा नीबू स्वाद में मीठा होता है। यह रसदार किस्म का होता है और इसका छिलका पतला होता है। यह अधिक गर्मी सहन कर सकता है। मीठा नीबू अधिकतर वर्षा ऋतु के बाद प्राप्त होता है।

नारंगी

भारत में नारंगी दो प्रकार की होती हैं—

(१) मीठी नारंगी

(२) खट्टी नारंगी

मीठी नारंगी

यह देखने में बड़ी तथा पतले छिलके की होती है। इसका गूदा पीलापन लिए होता है। यह रसदार और मोठी होती है। इसकी मुख्य दो किस्में होती हैं।

(१) माल्टा

(२) मौसम्मी

माल्टा तथा मौसम्मी में बहुत थोड़ा अन्तर होता है। साधा-

रण व्यक्ति इन्हें देखकर एक दूसरे से आसानी से अलग नहीं कर सकता ।

माल्टा

इसका छिलका पतला होता है । इसका गूदा भी कुछ लाल रंग लिए होता है । इसके रस से एक विशेष प्रकार की महक आती है यही इसे मौसम्मी से भिन्न करती है ।

बेर

इतिहास से विदित होता है कि बेर का जन्मस्थान चीन है । चीन से बेर भिन्न-भिन्न स्थानों पर ले जाया गया । इन स्थानों में मुख्य भारत तथा भूमध्य सागरीय भाग हैं । अब इसे संयुक्त राष्ट्र अमरीका तथा फ्रांस में भी उगाया जाता है ।

किस्में

बेर की मुख्य किस्में बनारसी, नागपुरी कांटे वाली तथा बिना कांटे वाली हैं । बेर मुख्यतः बीजू किस्म के ही अधिक मात्रा में लगाये जाते हैं ।

प्रसार

बेर के पौधे चश्मा विधि से तैयार किये जाते हैं । चश्मा तैयार करने के लिये बीजू पौधे उगाये जाते हैं, जब यह बीजू सवा फीट या डेढ़ फीट के हो जाते हैं तो इन्हें काट लिया जाता है । अब उत्तम प्रकार के पौधे की टहनी को "एक्सिस" (Axis) से

काट कर इस पौधे के ऊपरी भाग में जोड़ देते हैं। चश्मा फीता का प्रयोग जोड़ने के लिये किया जाता है। अब धीरे-धीरे पौधा वृद्धि करने लगता है। इस भांति चश्मा पौधे तैयार हो जाते हैं। यह पौधे तीन-चार साल में तैयार हो जाते हैं।

बेर के पौधे साटा किस्म से भी तैयार किये जाते हैं। पर अधिक चश्मा का ही उपयोग किया जाता है।

बेर की उत्तम खेती के लिये निम्नलिखित जलवायु, खाद, मिट्टी तथा सिंचाई का होना आवश्यक है।

जलवायु

इसके लिये गर्म तथा ठंडी दोनों ही प्रकार की जलवायु उपयुक्त है। इसकी खेती उन स्थानों पर अच्छी होती है जहाँ ग्रीष्म ऋतु में अधिक गर्मी तथा जाड़े के दिनों में अधिक ठंडक का होना आवश्यक है। वार्षिक वर्षा अट्ठाइस इंच से बियालिस इंच तक होनी चाहिये। कम वर्षा वाले स्थानों में भी इसे उगाया जा सकता है।

मिट्टी

यह सब प्रकार की मिट्टी में बोया जा सकता है।

खाद तथा खेत की तैयारी

ज़मीन को अच्छी तरह से साफ कर लेना चाहिये, फिर कुछ स्थान छोड़ कर कतारों में लगभग तीन फीट व्यास के गड्ढे खोदने चाहिये। दो-तीन सप्ताह तक इन गड्ढों को सूखने देना चाहिये। अब इन गड्ढों को चालीस-पैंतालीस सेर गोबर की खाद में तीन-

चार भाग नमक मिला कर भर देना चाहिये ।

इस भांति तैयार किये गये खेत में प्रसार की विधियों द्वारा वृक्ष लगाने चाहिये । बोने के बाद हर साल खाद की कुछ मात्रा बढ़ा कर वृक्षों में डालनी चाहिये । यहाँ तक कि वृद्ध वृक्षों को लगभग मन भर खाद देनी चाहिये ।

सिंचाई तथा छँटाई

मौसम के अनुसार गर्मी में अधिक तथा जाड़े में कम सिंचाई करते रहना चाहिये ।

बेर के वृक्षों की छँटाई करना अच्छा होता है । छँटाई करते समय वृद्ध तथा पुरानी टहनियों को काटा जाता है । अब इनके स्थान पर नई टहनियाँ पैदा हो जाती हैं । इन टहनियों में अधिक गूदे वाले बेर लगते हैं । छँटाई फल तोड़ने के बाद करनी चाहिये ।

फल

मार्च में फल पक कर तैयार हो जाते हैं । ये छोटे आकार के होते हैं । बेर का पेड़ लगभग तीन वर्षों में फल देने योग्य हो जाता है ।

हानिकारक कीड़े

बेर को अधिकतर कीड़े ही नुकसान पहुँचाते हैं । ये कीड़े "कारपोमियाँ" के नाम से प्रसिद्ध हैं । ये कीड़े अपने छोटे-छोटे अंडे फल के टहनियों से जुड़े भाग पर देते हैं । इन अंडों से लगभग अड़तालीस घण्टों में पिल्लू बन जाते हैं । ये पिल्लू फल

के अन्दर घुस जाते हैं। इससे फल सड़ जाते हैं। इस तरह से ये पके हुये बेरों को नष्ट कर देते हैं।

इन को नष्ट करने के लिए "डाइ-क्लोरो बेनज़ीन" द्रव का उपयोग किया जाता है। इससे अंडे तथा पिल्लू दोनों ही नष्ट हो जाते हैं।

उपयोग

पक्का फल खाने के काम आता है। इसके अतिरिक्त इसका जैम, मुरब्बा आदि भी बनता है। इसे सुखा कर भी खाया जाता है, जिसे बेचून कहते हैं।

रसभरी

यह एक स्वादिष्ट फल है। यह भारत में सभी जगह उत्पन्न की जा सकती है। रसभरी की अच्छी खेती का केन्द्र उत्तर भारत है।

उपयुक्त परिस्थितियाँ

जलवायु

रसभरी सम जलवायु वाले स्थानों में उत्तम होती है। इसके लिये अधिक जाड़ा हानिकारक है। अधिक ठंडक में फलों के गलने का डर रहता है।

मिट्टी

यों तो रसभरी सभी प्रकार की मिट्टी में उपजाई जा सकती

हैं, पर इसकी सफल बागवानी के लिये दोमट मिट्टी उत्तम है।

पौधा लगाने की विधि तथा खाद

रसभरी के पौधे छोटे-छोटे झाड़ियों की तरह के होते हैं। ये पौधे एक वर्ष में तैयार हो जाते हैं अतः ऐसे पौधों के लिए गड्ढे खोदने की आवश्यकता नहीं रहती।

इसके बीज छोटी-छोटी क्यारियों में वर्षा ऋतु के बाद बो दिये जाते हैं

इन क्यारियों में हल्की मात्रा में गोबर की खाद तथा कम्पोस्ट समय-समय पर डालते रहना चाहिये।

सिंचाई

गर्मी में हल्की सिंचाई करना अच्छा रहता है।

फल

रसभरी आकार में बेर के बराबर होती है ? फल एक वर्ष में प्राप्त हो जाता है। इसके फल पीले रंग के होते हैं। रसभरी स्वाद में खट्टी-मीठी होती है। यह एक स्वादिष्ट फल है।

उपयोग

फल के अतिरिक्त रसभरी चटनी, जैम आदि बनाने में भी प्रयोग की जाती है। रसभरी पेट की बीमारियों के लिए उत्तम है।

पपीता

पपीते के पेड़ दो तरह के होते हैं। एक नर वृक्ष दूसरा मादा वृक्ष। फूल दोनों वृक्षों पर लगते हैं, पर फल केवल मादा पेड़ों पर ही लगते हैं। बगीचे में पराग संचन की क्रिया के लिए एक दो नर वृक्षों का होना आवश्यक है।

भारत में पपीते की खेती अधिक मात्रा में बिहार में होती है। इसके अतिरिक्त यह उत्तर प्रदेश, बम्बई आदि में भी उत्पन्न किया जाता है।

उपयुक्त परिस्थितियाँ

जलवायु

यद्यपि पपीता अधिक जाड़ा और गर्मी सहन कर लेता है तथापि इसके लिए साधारण गर्म जलवायु उत्तम है। पपीते के लिए अधिक वर्षा अच्छी है, पर वर्षा का जल जड़ों में नहीं रुकना चाहिए।

मिट्टी

पपीता सभी प्रकार की मिट्टी में उपजाया जा सकता है।

पौधा लगाने की विधि तथा खाद

बगीचे को साफ करने के बाद दो-दो फीट व्यास तथा गहराई के गड्ढे लगभग ग्यारह फीट की दूरी छोड़-छोड़कर खोद लेने चाहिए। सूखने के बाद उन्हें खाद मिली मिट्टी से भर देना चाहिए।

पपीते के लिए गोबर की खाद कम्पोस्ट तथा हड्डी का चूरा उत्तम खादें हैं।

वर्षा के बाद बीज बो देने चाहिए। पपीते के नर तथा मादा पौधां को पहचानना ज़रा कठिन होता है। पर फूल लगने पर इनको पहचाना जा सकता है, क्योंकि नर फूलों में केवल पराग-कण होते हैं; जहाँ मादा फूलों में केवल गर्भाशय होता है।

अतः जब नर और मादा का भेद स्पष्ट होने लगे तो खेत में दो तीन नर पौधे रख कर, बाकी सब को उखाड़ देना चाहिये तथा इनके स्थानों पर गमलों, आदि में उगे हुए मादा पपीता के पौधों को लगा देना चाहिये।

सिंचाई

पपीते को गर्मी में माह में दो तीन बार तथा जाड़े में माह में एक बार सींचना चाहिए। इसे अधिक सींचने की आवश्यकता नहीं है।

फल

पपीता कच्चा होने पर हरे रंग का होता है, जब कि पकने पर यह पीले रंग का होता है। यह फल वज़न में तीन सेर तक पाया जाता है।

पपीते के पेड़ एक वर्ष के बाद फल देने लगते हैं, पर दूसरे वर्ष फल अधिक मात्रा में तथा अधिक स्वादिष्ट लगते हैं।

उपयोग

पपीता खाने के अतिरिक्त फिरनी आदि में उपयोग किया

जाता है। पपीते का शरबत बहुत स्वादिष्ट होता है। यह पेट के रोगों के लिए विशेष कर, जिगर के लिए बहुत ही लाभदायक है।

कटहल

कटहल भारतवर्ष की देन है। यह भारत के सभी भागों में बहुता यत्न से उत्पन्न किया जाता है। यह उत्तर प्रदेश, दक्षिण भारत तथा मद्रास में अधिकता से उत्पन्न किया जाता है। इसके वृक्ष काफी बड़े होते हैं। इन वृक्षों के तने पर बहुत बड़े-बड़े फल लगते हैं। यह फल कटहल के नाम से प्रसिद्ध है।

उपयुक्त परिस्थितियाँ

जलवायु

कटहल के पेड़ अधिक वर्षा वाले स्थानों में लगाये जाते हैं। वर्षा का जल ज़मीन में रुकना नहीं चाहिए। इससे जड़ें सड़ने का डर रहता है। इसकी उपज के लिए साधारण कम गर्म तथा कम ठंडी जलवायु उपयुक्त है। यह अधिक गर्मी तथा सर्दी को सहन कर सकता है।

मिट्टी

इसके बगीचे के लिए दोमट लाल मिट्टी बहुत उपयुक्त है। इसकी खेती कंकड़ीली भूमि में अच्छी होती है। भूमि में पानी का निकास अच्छा होना चाहिए। यही कारण है कि इसके लिए कंकड़ीली भूमि चुनी जाती है।

प्रसार

इसकी मुख्य किस्में गुलाब तथा रसदार हैं। इसको अधिकतर बीजू के द्वारा ही प्रसारित करते हैं। इससे किस्मों में कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता। बीजू के द्वारा साटा कलम बनाई जाती है। चश्मा आदि भी बनाये जाते हैं। परन्तु व्यापारिक दृष्टि से केवल बीजू पौधे ही बोये जाते हैं।

खाद तथा बगीचे की तैयारी

सर्वप्रथम बगीचे की ज़मीन से घास आदि निकाल कर उसे अच्छी तरह से साफ कर लेना चाहिए। अब कुछ दूरी पर लगभग साढ़े तीन फीट व्यास तथा गहराई के गड्ढे खोदने चाहिए। इन गड्ढों को कुछ दिनों तक सूखने देना चाहिए इससे हानिकारक कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

वर्षा ऋतु से पहले ही इन गड्ढों को खाद से भर देना चाहिए। गड्ढे को भरने के लिए लगभग सवा दो मन गोबर की खाद, एक मन पत्ती की सड़ी खाद की आवश्यकता होती है।

पौधा लगाने की विधि

वर्षा ऋतु के बाद पौधों को गड्ढों में लगाया जाता है। पौधे अधिकतर बीजू से ही तैयार किए जाते हैं। वर्ष के बाद पौधे में पुनः खाद डालें। इस भांति प्रत्येक वर्ष खाद की कुछ मात्रा बढ़ाकर बगीचे में डालनी चाहिए। खाद डालने से पौधा अधिक स्वस्थ होता है। यही कारण है कि प्रौढ़ वृक्षों को खाद की बहुत अधिक आवश्यकता होती है।

जाता है । पपीते का शरबत बहुत स्वादिष्ट होता है । यह पेट के रोगों के लिए विशेष कर, जिगर के लिए बहुत ही लाभदायक है ।

कटहल

कटहल भारतवर्ष की देन है । यह भारत के सभी भागों में बहुता यत्न से उत्पन्न किया जाता है । यह उत्तर प्रदेश, दक्षिण भारत तथा मद्रास में अधिकता से उत्पन्न किया जाता है । इसके वृक्ष काफी बड़े होते हैं । इन वृक्षों के तने पर बहुत बड़े-बड़े फल लगते हैं । यह फल कटहल के नाम से प्रसिद्ध है ।

उपयुक्त परिस्थितियाँ

जलवायु

कटहल के पेड़ अधिक वर्षा वाले स्थानों में लगाये जाते हैं । वर्षा का जल ज़मीन में रुकना नहीं चाहिए। इससे जड़ें सड़ने का डर रहता है । इसकी उपज के लिए साधारण कम गर्म तथा कम ठंडी जलवायु उपयुक्त है । यह अधिक गर्मी तथा सर्दी को सहन कर सकता है ।

मिट्टी

इसके बगीचे के लिए दोमट लाल मिट्टी बहुत उपयुक्त है । इसकी खेती कंकड़ीली भूमि में अच्छी होती है । भूमि में पानी का निकास अच्छा होना चाहिए। यही कारण है कि इसके लिए कंकड़ीली भूमि चुनी जाती है ।

प्रसार

इसकी मुख्य किस्में गुलाब तथा रसदार हैं। इसको अधिकतर बीजू के द्वारा ही प्रसारित करते हैं। इससे किस्मों में कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता। बीजू के द्वारा साटा कलम बनाई जाती है। चश्मा आदि भी बनाये जाते हैं। परन्तु व्यापारिक दृष्टि से केवल बीजू पौधे ही बोये जाते हैं।

खाद तथा बगीचे की तैयारी

सर्वप्रथम बगीचे की ज़मीन से घास आदि निकाल कर उसे अच्छी तरह से साफ कर लेना चाहिए। अब कुछ दूरी पर लगभग साढ़े तीन फीट व्यास तथा गहराई के गड्ढे खोदने चाहिए। इन गड्ढों को कुछ दिनों तक सूखने देना चाहिए इससे हानिकारक कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

वर्षा ऋतु से पहले ही इन गड्ढों को खाद से भर देना चाहिए। गड्ढे को भरने के लिए लगभग सवा दो मन गोबर की खाद, एक मन पत्ती की सड़ी खाद की आवश्यकता होती है।

पौधा लगाने की विधि

वर्षा ऋतु के बाद पौधों को गड्ढों में लगाया जाता है। पौधे अधिकतर बीजू से ही तैयार किए जाते हैं। वर्ष के बाद पौधे में पुनः खाद डालें। इस भांति प्रत्येक वर्ष खाद की कुछ मात्रा बढ़ाकर बगीचे में डालनी चाहिए। खाद डालने से पौधा अधिक स्वस्थ होता है। यही कारण है कि प्रौढ़ वृक्षों को खाद की बहुत अधिक आवश्यकता होती है।

सिंचाई

इसे अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। आवश्यकतानुसार अधिक या कम पानी देते रहना चाहिए। पौधा लगाने के बाद कुछ दिन तक सिंचाई करनी चाहिए जिससे जड़ें भूमि में अच्छी तरह जम जायें।

फल

इस भांति तैयार किये गये पौधे पांच, छै वर्ष में फलने लगते हैं। इसके फल बहुत बड़े-बड़े होते हैं तथा टहनियों के साथ लटकते हैं, परन्तु फल ग्रीष्म काल में ही पकते हैं। कटहल का फल मोटे छिलके का तथा कांटेदार होता है। आकार में यह अण्डाकार होता है।

कीड़े तथा बीमारियां

छोटे फलों को आसानी से कीड़े लग जाते हैं, परन्तु बड़े फलों को नष्ट करना इनके बस का नहीं है। कीड़ों से फलों की रक्षा करने के लिए छोटे छोटे फलों को कपड़े से ढक देना चाहिए। कीड़ों को दवाइयों से भी नष्ट किया जा सकता है।

इसके फलों को अधिकतर फफूँदी से ही बीमारी लगती है। यह एक प्रकार के रंगहीन परजीवी पौधे हैं। इनके द्वारा पौधे सड़ जाते हैं।

इन फफूँदी जनित रोगों से पौधे को बचाने के लिए फूलने के समय सात आठ बार "बोर्डो मिक्सचर" का प्रयोग करना चाहिए। इसके छिड़काव से यह बीमारियां नष्ट हो जाती हैं।

उपयोग

अपने देश में कटहल का उपयोग भिन्न-भिन्न तरह से किया जाता है। कच्चा फल तरकारी तथा अचार बनाने के काम आता है। कटहल का अचार बहुत स्वादिष्ट होता है। पक्का फल खाने के काम आता है। यह स्वाद में केले से मिलता है। यह फल बहुत बड़ा होता है। तौल में डेढ़ डेढ़ मन के कटहल भी देखे गये हैं।

अनन्नास

भारत में इसकी खेती अधिकतर बंगाल, मैसूर, मद्रास तथा दक्षिण भारत के अन्य कई भागों में होती है।

उपयुक्त परिस्थितियाँ

जलवायु

अनन्नास के लिए नम जलवायु उत्तम है। जिन स्थानों पर वर्षा अधिक मात्रा में होती है, वहां अनन्नास अधिक उत्पन्न किया जाता है। इसे अधिक पाला तथा गर्मी नुकसान पहुँचाती है।

मिट्टी

इसके लिए बालू और कंकड़ मिली दोमट मिट्टी उत्तम है।

पौधा लगाने की विधि

अनन्नास के पौधे सकरज़ से लगाये जाते हैं। सकरज़ (Suckers) मुख्य तने से निकलने वाली पत्तियों के एक्सिज़

(Axis) से निकलते हैं।

सकरज़ को अच्छी तरह जुती हुई ज़मीन में लगाते हैं। धीरे-धीरे यह बड़े पौधों का रूप धारण कर लेते हैं।

अनन्नास के लिए गोबर की खाद तथा कम्पोस्ट उत्तम खादें हैं। इन्हें समय-समय पर बगीचे में डालते रहना चाहिए।

सिंचाई तथा छँटाई

पौधा लगाने के बाद सिंचाई आवश्यक है। जाड़े में महीने में दो बार तथा गर्मी में चार बार सिंचाई करना उत्तम है।

हल्की छँटाई भी करते रहना चाहिए।

फल

सकरज़ को बोने के बाद लगभग सोलह महीने में फल लगने लगता है। यह फल बड़े आकार का पपीते की तरह होता है। अनन्नास लम्बा और गोलाकार दोनों ही होता है। यह बनावट में शरीफे की भांति होता है। यद्यपि शरीफा छोटा होता है।

उपयोग

अनन्नास खाने के काम आता है। इसके अतिरिक्त इसका शरबत आदि भी बनाया जाता है। यह स्वास्थ्यप्रद है।

आंवला

इतिहास से ऐसा विदित होता है कि आंवला का जन्मस्थान भारतवष है। यह उत्तर प्रदेश, बिहार, दक्षिण भारत में बहुतायत

से पाया जाता है, यद्यपि साधारण मात्रा में यह सभी स्थानों पर पाया जाता है। आंवला का वृक्ष काफी बड़ा तथा फैला हुआ होता है। इसकी पत्तियाँ आकार में बहुत ही छोटी होती हैं। आंवला के वृक्ष में फल लीची की भाँति गुच्छों में लगते हैं।

उपयुक्त परिस्थितियाँ

जलवायु

आंवला अधिक गर्म तथा ठंडी दोनों ही प्रकार की जलवायु को सहन कर सकता है। यही कारण है कि यह हर प्रकार की जलवायु में उत्पन्न किया जाता है। इसकी अच्छी पैदावार के लिए पानी का होना आवश्यक है, पर जल को पौधे के नीचे रुकना नहीं चाहिए। जल के रुकने से जड़ों के सड़ जाने का डर रहता है।

मिट्टी

इसके लिए सर्वोत्तम दोमट मिट्टी है। यह पथरीली मिट्टी में भी आसानी से उगाया जा सकता है। कंकड़ीली दोमट मिट्टी वाली भूमि इसकी उत्पत्ति के लिए बहुत ही उपयुक्त है।

खाद तथा बगीचे की तैयारी

सर्वप्रथम घास आदि निकालकर खेत को साफ कर लेना चाहिए। अब इस बगीचे में कुछ दूरी छोड़ते हुए कतारों में लगभग सवा तीन फीट व्यास के गड्ढे खोदने चाहिए। इन गड्ढों को कुछ दिनों तक सूखने देना चाहिए।

अब इनको गोबर की सड़ी ख़ाद तथा कम्पोस्ट से भर देना चाहिए। लगभग सवा मन गोबर की सड़ी ख़ाद तथा बारह सेर

पत्ती की सड़ी खाद को मिट्टी में मिला कर गड्ढों में भरना चाहिए।

पौधा लगाने की विधि

उपरोक्त रीति से तैयार किये हुए बगीचे में वर्षा ऋतु के उपरान्त पौधे लगाये जाते हैं। बगीचे में तैयार किये गड्ढों में अगस्त सितम्बर में बीज बो दिये जाते हैं।

सिंचाई

बीज बोने के बाद सिंचाई करना बहुत आवश्यक है। सिंचाई करने से जल्दी ही पौधा उत्पन्न हो जाता है। जब पौधा बड़ा होने लगे, तो आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए। ग्रीष्म काल में चार-पाँच बार तथा शरद काल में दो तीन बार सिंचाई करना उत्तम होगा।

जैसे-जैसे वृक्ष बड़ा होता जाए उसे अधिक खाद देनी चाहिए। प्रत्येक वर्ष पौधे को अरण्डी की खली, कम्पोस्ट; अमोनियम सल्फेट तथा गोबर की खाद मिट्टी में मिला कर देनी चाहिए।

फल

आंवला जाड़े की ऋतु में बहुतायत से मिलता है। इसके वृक्ष में मार्च से मई तक तो फूल ही लगते हैं। और ये फूल जनवरी फरवरी में अच्छे फलों का रूप धारण कर लेते हैं।

बीमारी तथा कीड़े

इसे कीड़ों तथा बीमारियों से नहीं के बराबर हानि पहुँचती है। कुछ कीड़ों के "प्यूपा" वृक्ष को हानि पहुँचाते हैं। इनके

द्वारा टहनियाँ सूखने लगती हैं। पर ऐसा बहुत कम होता है।

उपयोग

आंवला हरे रंग का तथा गोलाकार होता है। आंवला स्वाद में खट्टा होता है। यह बहुत ही लाभदायक फल है। हकीमों से लेकर चिकित्सकों तक सभी इसके गुणों की प्रशंसा करते हैं। आंवला कई दवाइयों में प्रयोग किया जाता है। आंवला को सुखा कर हर्र तथा बेहेरा के साथ मिला कर प्रयोग किया जाता है। यह दवा बाज़ार में त्रिफला के नाम से प्रसिद्ध है। यह पेट के लिए लाभदायक तथा दिमागी ताकत को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त इसका अचार, मुरब्बा आदि बनाया जाता है। इसका तेल भी बनाया जाता है जो बालों को काला तथा लम्बा बनाता है। इस भाँति आंवला बहुत ही लाभदायक फल है।

शहतूत

शहतूत की जन्मभूमि चीन मानी जाती है। कहा जाता है कि शहतूत चीन से ही भिन्न-भिन्न स्थानों पर ले जाया गया है। भारत में शहतूत की खेती बिहार, मद्रास तथा मैसूर में अधिक मात्रा में होती है।

उपयुक्त परिस्थितियाँ

जलवायु

यह गर्म तथा सर्द दोनों प्रकार की जलवायु में उत्पन्न किया

जा सकता है। वैज्ञानिकों ने इसे शीत-कटिबन्ध जलवायु का वृक्ष कहा है।

मिट्टी

शहतूत की खेती सब प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है, इसके लिए विशेष प्रकार की मिट्टी की आवश्यकता नहीं होती।

खेत की तैयारी, खाद तथा पौधा लगाने की विधि

सब से पहले बगीचे से घास आदि उखाड़ कर उसे साफ कर लेना चाहिए। कुछ दूरी छोड़कर अढ़ाई तीन फीट गहरे गड्ढे बना लें। कुछ दिनों तक इन गड्ढों को सूखने दें।

इन गड्ढों को गोबर की खाद से भरना चाहिए। भरने से पहले गोबर की खाद को मिट्टी में मिला लें। यह कार्य वर्षा ऋतु से पहले हो जाना चाहिए। ताकि वर्षा के जल से खाद मिट्टी में मिलकर भूमि को अधिक उपजाऊ बना सके। शहतूत की खाद में नाइट्रोजन का होना आवश्यक है। इसके अभाव से पौधों की वृद्धि रुक सकती है।

पौधा लगाने के बाद प्रत्येक वर्ष कुछ खाद की मात्रा पौधे को देते रहें, इससे उत्तम प्रकार का फल प्राप्त होता है।

सिंचाई तथा छँटाई

ग्रीष्म काल में सिंचाई करनी आवश्यक है। ग्रीष्म ऋतु के पश्चात शहतूत के पौधों को सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। पौधा लगाने के कुछ दिनों तक सिंचाई करना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि इस समय यदि पानी का अभाव रहेगा तो जड़ें भूमि में

जम नहीं सकेंगी अतः पौधे की वृद्धि रुक जायेगी और पौधा नष्ट हो जायेगा।

छँटाई फल तोड़ने के बाद करनी चाहिए। छँटाई करने से दूसरे वर्ष अधिक संख्या में फल प्राप्त होते हैं।

फल

इसमें फल जून के महीने में लगते हैं। ये खाने में स्वादिष्ट होते हैं। यह स्वास्थवर्धक फल है। शहतूत में चीनी अधिक मात्रा में पाई जाती है।

किस्में

आधुनिक उन्नति के युग में रेशम की दृष्टि से शहतूत की लगभग एक सौ बारह किस्में लगाई जा चुकी हैं, इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए अन्य कई किस्में लगाने के लिए वैज्ञानिक प्रयत्न-शील हैं।

उपयोग

उपयोग की दृष्टि से यह वृक्ष अपनी एक भिन्न विशेषता रखता है। इसका फल खाने के उपयोग आता है, पर इसके फल का व्यापारिक महत्व नहीं के बराबर है। यह स्वादिष्ट फल है, शहतूत के पेड़ के पत्ते रेशम के कीड़े पालने के काम आते हैं। व्यापारिक दृष्टि से इसकी खेती रेशम के कारण ही महत्त्वपूर्ण है। रेशम के कीड़े शहतूत के पत्तों को भोजन के रूप में उपयोग करते हैं।

बेल

बेल का वृक्ष बहुत बड़ा तथा फैला हुआ होता है। यह वृक्ष कांटेदार होता है। इसका फल बेल नाम से प्रसिद्ध है। बेल गोलाकार होता है। यह लगभग कैथा के बराबर होता है। इसके वृक्ष भारत में बहुतायत से पाये जाते हैं। यद्यपि यह एक लाभ-दायक फल है तथापि इसका अधिक व्यापारिक महत्व नहीं है।

उपयुक्त परिस्थितियाँ

जलवायु

बेल सब प्रकार की जलवायु में उत्पन्न किया जा सकता है। यह अधिक वर्षा, अधिक गर्मी तथा अधिक जाड़े को सहन कर सकता है। बेल के वृक्ष ऐसे स्थानों पर नहीं होने चाहिए जहाँ जल रुकता हो। जल के रुकने से जड़ों के सड़ने का भय रहता है।

मिट्टी

यह सब प्रकार की मिट्टी में पैदा किया जा सकता है। इसके लिए सर्वोत्तम दोमट मिट्टी है।

खाद तथा बगीचे की तैयारी

भूमि को साफ करने के बाद अढ़ाई, तीन फीट व्यास के गड्ढे लाइनों में खोद लेने चाहिए। इनकी गहराई भी तीन फीट के लगभग होनी चाहिए। गड्ढों को कुछ दिन तक धूप में सूखने

देना चाहिए ताकि हानिकारक कीड़े नष्ट हो सकें।

गोबर की सड़ी खाद, अरण्डी की खली तथा लकड़ी की राख को मिट्टी में मिला कर इन गड्ढों को भर देना चाहिए। गोबर की खाद अन्य खादों की अपेक्षा तिगुनी मात्रा में डालनी चाहिए।

पौधा लगाने की विधि

वर्षा के उपरान्त बीजों को इन गड्ढों में बो देते हैं। बीज बोने का उत्तम समय अगस्त, सितम्बर है।

सिंचाई

बोने के बाद कुछ दिनों तक सिंचाई करनी चाहिए। जब पौधा कुछ बड़ा हो जाये तो इसे सिंचाई की आवश्यकता नहीं रहती। फिर तो आवश्यकतानुसार शुष्क मौसम में एक दो बार पानी दे देना उत्तम है।

बेल का वृक्ष शीघ्र ही बढ़ने लगता है। बढ़ने के समय खाद डालने से उत्तम फल उत्पन्न होते हैं। यद्यपि बिना खाद डाले भी यह वृक्ष फल देता है। अमोनियम सल्फेट की खाद इसके लिए बहुत लाभदायक है। पौधा लगाने के बाद प्रत्येक वर्ष कुछ भाग बढ़ा कर गोबर की खाद, अमोनियम सल्फेट, कमपोस्ट आदि खाद के रूप में पौधे को देते रहना चाहिए।

फल

जून माह में इन वृक्षों में फूल लगते हैं। इन फूलों से फल बनने तथा पकने में लगभग एक वर्ष लग जाता है। फल पेड़

के साथ भी पक जाते हैं। कच्चे फलों को तोड़कर भी पकाया जा सकता है। सात-आठ वर्षों में बेल का वृक्ष फलने लगता है। इसके फलों का छिलका बहुत कड़ा होता है। यह चाकू से नहीं काटा जा सकता, केवल तोड़ कर ही इसका उपयोग किया जा सकता है।

बीमारियाँ तथा कीड़े

बीमारियाँ तथा कीड़ों से इसे नहीं के बराबर नुकसान होता है।

उपयोग

इसका फल खाने के उपयोग आता है। बेल का गूदा मीठा होता है। खाने के अतिरिक्त इसके गूदे से शरबत आदि बनता है। यह पेट की बीमारियों के लिए बहुत लाभदायक है। बेल में चिकनाई, प्रोटीन, चीनी आदि तत्व पाये जाते हैं, जो स्वास्थ्य-वर्धक होते हैं।

जामुन

जामुन भारत की देन है। भारत में जामुन बहुतायत से उत्तर प्रदेश तथा बिहार के इलाके में पायी जाती है। प्रायः इसकी खेती सभी स्थानों पर होती है। इसके पेड़ बड़े-बड़े होते हैं, जिनमें काले रंग के फल लगते हैं।

जलवायु

इसके लिए अधिक गर्म परन्तु कम ठंडी जलवायु उपयुक्त

है। इसके लिए अधिक वर्षा अच्छी है।

मिट्टी

यह सभी प्रकार की मिट्टी में उपजायी जा सकती है। इसके लिए कोई विशेष प्रकार की मिट्टी की आवश्कता नहीं होती।

बगीचे की तैयारी, खाद तथा पौधा लगाने की विधि

सर्वप्रथम बगीचे को साफ कर लेना चाहिए। बगीचे से घास आदि अनावश्यक वनस्पतियों को उखाड़ फेकना चाहिए। अब बगीचे में चार-पाँच गज की दूरी छोड़ कर गड्ढे खोदने चाहिए। गड्ढे लगभग तीन फीट गहराई तथा व्यास के होने चाहिए। इन गड्ढों को गोबर की खाद तथा कम्पोस्ट से भरना चाहिए। पहले लगभग पैंतीस सेर गोबर की खाद तथा बारह सेर कम्पोस्ट मिट्टी में मिला देनी चाहिए। फिर इस खाद मिली मिट्टी से गड्ढों को सूखने देना चाहिए।

वर्षा ऋतु के बाद इन गड्ढों में पौधे लगाने चाहिए।

आवश्यकतानुसार वर्ष दो वर्ष में थोड़ी बहुत मात्रा में खाद देते रहना चाहिए।

सिंचाई

इसे सिंचाई की आवश्यकता नहीं है।

फल तथा किस्में

यह फल प्रायः गहरे बैजनी या काले रंग का होता है। इसका छिलका बहुत पतला होता है। छिलके को फल से अलग नहीं

किया जा सकता। इसका गूदा खाया जाता है।

गूदा बैंजनी रंग का होता है। बहुत पके जामुन का स्वाद मीठा होता है। कच्ची जामुन खट्टमीठी होती हैं।

मुख्यतः जामुन तीन प्रकार की होती है।

(१) बड़े आकार वाली जामुन

यह जामुन स्वादिष्ट होती है।

(२) छोटी गुठली वाली जामुन

यह जामुन यद्यपि बड़े आकार की नहीं होती तथापि यह सब जामुनों से अधिक स्वादिष्ट होती है। इस प्रकार की जामुन अधिक गूदे वाली होती है।

(३) बड़ी गुठली वाली जामुन

बड़ी गुठली वाली जामुन अधिक स्वादिष्ट नहीं होती। यह कम गूदे वाली होती है।

कीड़े तथा बीमारियाँ

जामुन को कीड़ों तथा बीमारियों से कोई हानि नहीं होती।

उपयोग

जामुन को खाने के अतिरिक्त शरबत आदि बनाने में प्रयोग किया जाता है। जामुन की गुठली में प्रोटीन, चूना फासफोरस पाये जाते हैं। इसलिए जामुन की गुठली को कूट कर कुट्टी में मिला कर जानवरों को खिलाया जाता है।

जामुन व्यापारिक दृष्टि से अधिक उपयोगी नहीं है, क्योंकि

इसके फलों को अधिक समय तक नहीं रखा जा सकता। इसलिए इसके बगीचे बहुत कम लगाए जाते हैं।

जामुन की गुठली डायबटीज के रोगियों के लिए उपयोगी है।

लोकाट

अधिक मात्रा में लोकाट चीन में पाया जाता है। कहा जाता है कि चीन ही लोकाट की जन्मभूमि है। इसके अतिरिक्त यह संसार के अन्य कई भागों में भी अच्छी मात्रा में पाया जाता है। भारत में यह अधिकता से पंजाब, उत्तर प्रदेश तथा बिहार के कुछ भागों में होता है।

उपयुक्त परिस्थितियाँ

जलवायु

साधारण जलवायु जो अधिक गर्म या ठंडी न हो लोकाट के लिए उपयुक्त है।

मिट्टी

लोकाट के बगीचे के लिए बालू वाली दोमट मिट्टी उपयुक्त है। इसे हर तरह की भूमि में खाद डाल कर उपजाया जा सकता है।

पौधा लगाने की विधि तथा खाद

बगीचे को साफ करने के बाद पांच-पांच गज़ की दूरी पर लाइनों में एक गज़ व्यास के गड्ढे खोद लेने चाहिए। कुछ दिनों

तक सूखने के बाद गड्ढों को खाद मिली मिट्टी से भर देना चाहिए। गोबर की खाद, अरण्डी की खली तथा कम्पोस्ट आदि खाद के रूप में बगीचे में डाला जाता है। अमोनियम सल्फेट लोकाट की भूमि के लिए उत्तम खाद है।

सिंचाई

ग्रीष्म काल में चार बार तथा जाड़े में दो बार सिंचाई करनी आवश्यक है।

फलन

लोकाट फल प्रायः नवम्बर से जनवरी तक बहुतायत से मिलते हैं।

उपयोग

लोकाट के फल अण्डाकार तथा पीले रंग के होते हैं। लोकाट की कुछ किस्में अधिक पीले रंग की तथा कुछ किस्में हल्के पीले रंग की होती हैं, पर इन किस्मों के स्वाद में कोई विशेष अन्तर नहीं होता है। लोकाट खाने के अतिरिक्त जैली, जैम आदि बनाने के काम आता है।

फालसा

इसका जन्मस्थान भारत है। भारत में फालसा अधिक मात्रा में उत्तरप्रदेश तथा बिहार में उत्पन्न किया जाता है। यह व्यापारिक दृष्टि से अधिक उपयोगी नहीं है। साधारण मात्रा में

यह सभी स्थानों पर उपजाया जाता है।

उपयुक्त परिस्थितियाँ

जलवायु

यह साधारण गर्म जलवायु में उपजाया जाता है।

मिट्टी

इसकी सफल खेती के लिए रेतीली मिट्टी उपयुक्त है। फालसा सभी प्रकार की मिट्टी में आसानी से उपजाया जा सकता है।

पौधा लगाने की विधि तथा खाद

इसके लिए सबसे पहले तीन फीट व्यास के गड्ढे बगीचे में खोदने चाहिए। इन गड्ढों को कुछ दिनों तक सूखने देना चाहिए। सूखने से हानिकारक कीड़े मर जाते हैं।

इन गड्ढों को गोबर की सड़ी खाद तथा कम्पोस्ट से भर देना चाहिए। लगभग एक मन गोबर की खाद तथा बारह सेर कम्पोस्ट को मिट्टी में मिला कर गड्ढों को भरना चाहिए।

वर्षा के बाद फालसा के बीज इन गड्ढों में सितम्बर में बो देने चाहिए।

प्रत्येक वर्ष खाद की कुछ मात्रा बढ़ा कर बगीचे में डालनी चाहिए। अधिक तथा उत्तम खाद देने से पौधा शीघ्र वृद्धि प्राप्त करेगा।

सिंचाई

खाद देने के बाद भली भाँति सिंचाई करना आवश्यक है जिससे खाद मिट्टी में अच्छी तरह से मिल जाए। जब वृक्ष बड़ा हो

जाए तो इसे सींचने की आवश्यकता नहीं होती। गर्मी के दिनों में दो तीन बार पानी दे देना अच्छा होता है।

छँटाई

फालसा के पौधे की छँटाई आवश्यक है। छँटाई फल तोड़ने के समय करनी चाहिए। छँटाई में सूखी टहनियों को काट देना चाहिए। इन कटे हुए भागों से नई टहनियाँ निकलती हैं। यह टहनियाँ पुनः फल देने योग्य हो जाती है। छँटाई का मुख्य उद्देश्य अधिक संख्या में फल प्राप्त करना ही होता है।

फल

फालसा प्रायः पौधा लगाने के तीन वर्ष बाद फल देता है। इसके फल छोटे आकार के होते हैं। फालसा के फलों में यह विशेषता है कि यह एक समय में नहीं फलते। अतः पक्के फलों को तोड़कर आसानी से बेचा जा सकता है। फालसा देखने में कुछ लाली लिए हुए काले या बैजनी रंग के होते हैं, जैसे कि जामुन के फल होते हैं, पर जामुन बहुत बड़े फल हैं। फालसा जामुन की अपेक्षा बहुत छोटा होता है।

उपयोग

फालसा बहुत स्वादिष्ट फल है। यह खट्टे-मीठे स्वाद का होता है। फालसा का उपयोग खाने के अतिरिक्त शरबत आदि बनाने के लिए भी किया जाता है।

अंगूर

अंगूर का जन्मस्थान पश्चिम भारत तथा उसके निकट-वर्ती भाग माने जाते हैं। इसकी खेती दुनिया में उत्तरी अमरीका, स्पेन, इटली तथा फ्राँस में अधिक मात्रा में होती है। भारत में इसकी उपज अधिकतर शिमला, मैसूर, बम्बई आदि स्थानों में है।

उपयुक्त परिस्थितियाँ

जलवायु

यह उष्ण और समशीतोष्ण जलवायु में पाया जाता है। अंगूर का वृक्ष अधिक गर्मी तथा जाड़ा दोनों को ही सहन कर सकता है। पकने के समय जलवायु का गर्म तथा शुष्क होना उत्तम होता है। पकते समय ठंडी तथा नम जलवायु फलों को नुकसान पहुँचाती है।

मिट्टी

अंगूर की सफल बागवानी काली, लाल तथा रेतीली मिट्टी में होती है। अंगूर की खेती के लिए दोमट मिट्टी बहुत ही अच्छी है।

पौधा लगाने की विधि तथा खाद

भूमि को साफ करने के बाद लगभग बारह फीट की दूरी पर अढ़ाई-अढ़ाई फीट व्यास तथा गहराई के गड्ढे खोदने

चाहिए। इन गड्ढों को कुछ दिनों तक सूखने देना चाहिए। फिर इन गड्ढों को गोबर की खाद कम्पोस्ट तथा हड्डी के चूरे की खाद को मिट्टी में मिला कर भरना चाहिए। यह कार्य वर्षा के पहले पूरा हो, ताकि वर्षा के जल से खाद्य तत्व मिट्टी में मिल सकें। अंगूर के पौधे जाड़े के दिनों में लगाए जाते हैं। अंगूर के पौधे लताओं के रूप में बढ़ते हैं अतः इन लताओं को सहारा देने के हेतु पौधे के निकट बाँस आदि गाड़ दें।

प्रत्येक वर्ष खाद कुछ मात्रा में बढ़ा कर वर्षा के पहले पौधों में डालनी चाहिए। इससे खेती उत्तम प्रकार की होती है।

सिंचाई

पौधा लगाने के बाद कुछ दिन सिंचाई का करना बहुत ही आवश्यक होता है। सिंचाई के फलस्वरूप जड़ें भूमि में अच्छी तरह से जम जाती हैं। जब बेल बढ़ने लगे तो आवश्यकतानुसार पानी दें। फल लगने के समय पानी देना हानिकारक है।

छँटाई

छँटाई करना लाभदायक है। छँटाई करने से पुनः फल प्राप्त होता है। छँटाई में पुरानी टहनियों को काट दिया जाता है। अब इन कटे स्थानों में से नई टहनियाँ उग आती हैं और यह पुनः फल देने योग्य हो जाती हैं।

फल

अंगूर की लतायें लगभग तीन वर्ष में फलने लगती हैं। यदि फूल नवम्बर में लगें तो फल मार्च तक प्राप्त होता है। भिन्न-

भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न समय में इसके फल उपलब्ध होते हैं। यही कारण है कि अंगूर वर्ष भर भारत में प्राप्त होता है।

अंगूर के फल मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं एक बीज वाले दूसरे बिना बीज के। बिना बीज के फल अधिक स्वादिष्ट होते हैं। इसके अतिरिक्त इसकी कुछ जातियाँ सुखा कर काम में लाई जाती हैं। इनमें किसमिश तथा मोन्नका मुख्य है।

उपयोग

अंगूर एक स्वादिष्ट फल है। यह स्वादिष्ट होने के अतिरिक्त अपने अन्दर अनेक गुण रखता है। यही कारण है कि इसका उपयोग दवा की भाँति भी किया जाता है। अंगूर रक्त को साफ करता है, यह पेट की बीमारियों के लिए लाभदायक है। अंगूर का उपयोग जैम, चटनी आदि बनाने में भी किया जाता है। यही नहीं इसके सूखे फल किसमिश, मोन्नका मिठाइयों में डालने के काम आते हैं।

खजूर

खजूर एक सूखा फल है। इसकी जन्मभूमि अरब तथा उसके निकटर्ती भाग हैं। खजूर के वृक्ष अधिकतर रेगिस्तानी भागों में पाये जाते हैं। भारत में खजूर की सफल खेती राजपूताना में होती है। राजपूताना के अतिरिक्त खजूर के बगीचे मैसूर, पंजाब आदि में लगाए जाते हैं। यही नहीं खजूर के कुछ वृक्ष उत्तरप्रदेश के इलाकों में भी दृष्टिगोचर होते हैं।

उपयुक्त परिस्थितियाँ

जलवायु

खजूर के वृक्षों के लिए गर्म तथा सूखी जलवायु उत्तम है। यही कारण है कि इसकी खेती अरब जैसे गर्म देशों में अच्छी होती है।

मिट्टी

खजूर के लिए अधिक बालू वाली मिट्टी उत्तम होती है। इसी लिए यह रेगिस्तानों में उत्पन्न की जाती है।

पौधा लगाने की विधि तथा खाद

भूमि को साफ करने के बाद लगभग छै-सात गज़ की दूरी पर तीन फीट गहराई तथा व्यास के गड्ढे खोदने चाहिए। इन गड्ढों को गोबर की खाद डाल कर भर देना चाहिए। तब इनमें पौधों को लगाना चाहिए।

पौधा लगाने के बाद प्रत्येक वर्ष कुछ खाद की मात्रा बढ़ा कर बगीचे में डालते रहें।

सिंचाई

पौधा लगाने के बाद सिंचाई करना आवश्यक है। जब पौधे कुछ बड़े होने लगें तो सिंचाई आवश्यकतानुसार ही करनी चाहिए। फूल लगने के समय से फल लगने तक सिंचाई करना हानिकारक होता है। अतः सिंचाई नहीं करनी चाहिए।

फल

खजूर का पेड़ लगभग आठ-नौ वर्ष में फल देने योग्य हो

जाता है। इसमें प्रायः फरवरी में फूल लगते है तथा जुलाई में फल प्राप्त होते हैं। यह खाने में मीठा होता है। ताज़े फलों का रंग गहरा पीला तथा सूखे फलों का रंग गहरा भूरा होता है।

उपयोग

खजूर खाने के काम आते हैं। इनको सुखा कर बाहर के देशों में भेजा जाता है। यह स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। खजूर में फैट, प्रोटीन विटामिन तथा चीनी भी पाई जाती है।

अंजीर

इसका जन्मस्थान अरब देश है। यहाँ से यह संयुक्त राष्ट्र अमेरीका, स्पेन, रोम और भारत में लाया गया। उपयुक्त जलवायु होने के कारण इन सब स्थानों पर यह अधिकता से उत्पन्न किया जाने लगा। भारत में यह बहुतायत से बम्बई, मद्रास तथा मैसूर आदि प्रान्तों में पैदा किया जाता है।

उपयुक्त परिस्थितियाँ

जलवायु

इसके वृक्ष सभी प्रकार की जलवायु में उत्पन्न किए जा सकते हैं। बड़े वृक्ष गर्मी की अधिकता को सहन कर सकते हैं जब कि लगभग तीन वर्ष तक के वृक्षों को गर्मी नुकसान पहुँचाती है। पकते समय अधिक वर्षा हानिकारक है। अधिक वर्षा होने से

फल जल्दी पक जाते हैं। इससे फलों के गल जाने का भय रहता है।

मिट्टी

अंजीर की उत्तम खेती के लिए चिकनी दोमट मिट्टी अच्छी है। यदि मिट्टी में चूना अधिक हो तो यह सोने में सुहागे का काम करती है। अंजीर के लिए चूना बहुत उत्तम है।

पौधा लगाने की विधि तथा खाद

बगीचा साफ कर लेने के बाद बीस-बीस फीट की दूरी पर अढ़ाई या तीन फीट गहराई तथा व्यास के गड्ढे खोदने चाहिए। अब इन गड्ढों को कुछ समय तक सूखने देना चाहिए। और इन गड्ढों को गोबर की खाद, पत्ती की खाद तथा हड्डी की खाद को मिट्टी में मिला कर भर देना चाहिए। इन खादों की मात्रा क्रमशः सवा मन, बीस सेर तथा दो सेर होनी चाहिए।

वर्षा होने के बाद पौधों को लगाना चाहिए। थोड़ी मात्रा में खाद हर वर्ष बरसात से पहले पौधों में डालते रहना चाहिए। इससे पौधे अधिक स्वस्थ होते हैं।

सिंचाई

अधिक सिंचाई की इस पौधे को कोई आवश्यकता नहीं है। फिर भी गर्मी के दिनों में महीने में चार-पाँच बार तथा जाड़े के दिनों में महीने में दो-तीन बार सिंचाई करना उत्तम है।

फल

बोने के तीन चार वर्ष बाद फल प्राप्त होने लगता है। इसके

फल गोल आकार के होते हैं जो सूखने पर चपटे गोलाकार हो जाते हैं। इसके फल जून, जुलाई में बहुतायत से प्राप्त होते हैं। अंजीर खाने में स्वादिष्ट होती है।

उपयोग

इसके फल खाने के अतिरिक्त शरबत आदि बनाने के काम आते हैं। यही नहीं अंजीर का उपयोग दवा की भाँति भी किया जाता है, क्योंकि अंजीर पेट की बीमारियों के लिए लाभदायक है।

नारियल

नारियल अधिक मात्रा में भारतवर्ष बंगाल, बिहार में होता है। नारियल अधिकतर बम्बई की ओर भी पाया जाता है। अब इसकी खेती भारत के अन्य भागों में भी होने लगी है।

उपयुक्त परिस्थितयाँ

जलवायु

नारियल के लिए नम जलवायु उत्तम है। ऐसी जलवायु जिसमें अधिक गर्मी अथवा अधिक सर्दी न हो, नारियल के लिए अत्यन्त लाभदायक है। यही कारण है कि यह समुद्र के निकट-वर्ती भागों में अधिक मात्रा में उत्पन्न किया जाता है।

मिट्टी

नारियल के लिए रेतीली मिट्टी जिसमें नमी हो अच्छी है।

पौधा लगाने का विधि तथा खाद

भूमि को अच्छी तरह से साफ करने के बाद लगभग तीन फीट व्यास तथा गहराई के गड्ढे खोदने चहिए। इन गड्ढों को गोबर की सड़ी खाद, पत्ती की खाद को मिट्टी में मिला कर भरना चाहिए। अब पौधे को गड्ढों में लगाना चाहिए। पौधे को बोने का उत्तम समय जून, जुलाई अथवा नवम्बर का महीना है। वर्षा का पानी इसकी जड़ों में नहीं जमना चाहिए। पौधा लगाने के बाद हर साल वर्षा से पहले खाद को खेत में डालना चाहिए। पत्ती की खाद, गोबर की खाद, अमोनियम सल्फेट के अतिरिक्त नारियल के बगीचे में नमक भी डाला जाता है। नमक डालने से अधिक उत्तम फल प्राप्त होते हैं।

सिंचाई

नारियल के वृक्ष को अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं है। फिर भी जाड़े के मौसम में एक दो बार तथा गर्मी में तीन-चार बार सींचना अच्छा है।

नारियल इतने मज़बूत बक्स में बन्द होता है कि इसे कीड़े आदि नुकसान नहीं पहुँचा सकते।

फल

नारियल का फल बोने के बाद लगभग छै वर्ष में प्राप्त होने लगता है। नारियल अधिकतर जनवरी में प्राप्त होता है।

उपयोग

नारियल का उपयोग आज बहुत बड़े पैमाने में होता है।

★